श्री शान्ति चक्र मण्डल कल्प पूजा विधान

रचियता :

परम पूज्य खण्ड विद्या धुरन्धर
श्री 108 बालाचार्य योगीन्द्रसागरजी महाराज सा.

सम्पादिका :

डॉ. सविता जैन, उज्जैन (म. प्र.)
फोन : 0734-(नि.) 2515395, (आ.) 2516995
मोबाइल नं. : 9826093618

प्रकाशक :

नेशनल नॉन बायलेन्स यूनिटी फाउंडेशन ट्रस्ट
66, लक्ष्मी नगर, उज्जैन (म. प्र.), दूरभाष : 0734-2515395

श्री शान्ति चक्र मण्डल कल्प पूजा विधान

रचयिता : **परम पूज्य खण्ड विद्या धुरन्धर श्री 108 बालाचार्य योगीन्द्रसागरजी महाराज सा.**

सम्पादिका : **डॉ. सविता जैन,** उज्जैन (म. प्र.)
फोन : 0734-(नि.) 2515395, (आ.) 2516995
(मो.) 9826093618

प्रथमावृत्ति : 1000 प्रतियाँ

विमोचन : 14 जून, 2003 श्री सिद्ध क्षेत्र गढ़ गिरनारजी

मूल्य : **पुनः मुद्रण सहयोग : 51/-**

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह)**
मनिहारों का रास्ता, जयपुर। फोन 0141-2313339
मोबाइल नं. 9829050791

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ क्र.नं.
1	प. पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती श्री 108 आचार्य सन्मतिसागरजी म. सा. का शुभाशीष	4
2	शांति चक्र यन्त्र का स्वरूप— गणधराचार्य कुन्थुसागरजी म. सा.	6
3	अपनी बात— बालाचार्य योगीन्द्रसागर ''सागर''	9
4	विमलाञ्जलि— वैद्य पं. विमल प्रकाश जैन ''शास्त्री''	10
5	संपादकीय— डॉ. सविता जैन	11
6	शान्ति मण्डल कल्प विधान एवं पूजा विधि	12
7	श्री देव-शास्त्र-गुरु समुच्चय पूजा	26
8	श्री सिद्ध परमेष्ठी पूजा	31
9	श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा	36
10	श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर अर्चना	42
11	श्री पंच परमेष्ठी अर्चना	48
12	श्री अर्हतादि मंगलोत्तमशरण अर्चना	54
13	जयादि अष्ट देवता अर्चना	58
14	विद्यादि सोलह देवता अर्चना	63
15	चतुर्विंशति शासन देवी अर्चना	68
16	द्वात्रिंशद इन्द्र अर्चना	76
17	दश दिक्पाल अर्चना	84
18	चतुर्विंशति यक्ष अर्चना	87
19	नवग्रह अर्चना	93
20	अनावृत यक्ष अर्चना	96
21	श्री क्षेत्रपाल अर्चना	96
22	अढ़ाई द्वीप स्तवन	105
23	थोस्सामि स्तवन	105
24	पंच गुरु भक्ति	106
25	प्रशस्ति	107

आशीर्वाद

वर्तमान युग में भगवान आदिनाथ से भगवान महावीर श्रुत परम्परा के मूलकर्त्ता हैं तथा गणधर वृषसेन से गणधर गौतम स्वामी श्रुत परम्परा के उत्तरकर्त्ता हैं, उसके बाद अर्वाचीन ऋषियों से श्रुत परम्परा प्रवाहित होती आ रही है। आज ख्यातीप्राप्त आचार्य कुन्द कुन्द देव का नाम श्रुत परम्परा में अच्छी तरह से लिया जाता है। इन्होंने भगवान सीमन्धर स्वामी से सुनकर श्रुत को प्रवाहित किया है। इस शताब्दी में सर्वप्रथम आचार्य परम्परा में मुनि कुञ्जर आचार्य परमेष्ठी आदिसागर अंकलीकर का नाम लिया जाता है। इन्होंने अपनी आराधना से आराधित आत्मा से उद्भुत श्रुत को जिन धर्म रहस्य, दिव्य देशना, उद्बोधन, आन्तिम दिव्य देशना शिव-पथ इत्यादि के नाम से किया। इसी परम्परा को आचार्य महावीरकीर्तिजी ने थांदला में आचार्य सुधर्मसागरजी से मंगशिर शुक्ला 11, 1937, वि. नि. सं. 2465, वि. सं. 1995 को क्षुल्लक दीक्षा एवं मुनि दीक्षा फाल्गुन शुक्ला ग्यारस, 17 मार्च, 1943 को मुनि कुञ्जर आचार्य परमेष्ठी आदिसागर अंकलीकर से दीक्षा लेकर और इसी वर्ष गुरु का आचार्य पद चातुर्मास में प्राप्त कर प्रबोधाष्टक चतुर्विंशति स्तोत्र इत्यादि नाम से ग्रंथ लिखे और आचार्य परम्परा के साथ-साथ श्रुत परम्परा को आगे बढ़ाया। इस कड़ी में जुडे हुए निमित्त ज्ञान शिरोमणि आचार्य विमलसागरजी ने आचार्य आदिसागरजी अंकलीकर की परम्परा और आचार्य शान्तिसागरजी दक्षिण की परम्परा इस युग में निर्बाध चली आ रही है। वात्सल्य से धर्म प्रभावना करें। इस सूत्र ने श्रुत को आगे वृद्धिगत करने में अपना योगदान दिया है।

बालाचार्य योगीन्द्रसागर महाराज के ज्ञान का क्षयोपशम अच्छा है। जिन साहित्य में रुचि विशेष है। उसमें भी आचरण की योग्यता को प्राप्त करने में तथा रुचि की वृद्धि कराने में आपका साहित्य अद्धितीय है। उसके कारण उस साहित्य या काव्य कला में सरलता तथा सुगमता के साथ गम्भीरता भी अधिक पाई जाती है। आज का युग संगीत का है। इस संग व्यक्ति मंत्र मुग्ध हो जाता है। आत्मा तत्व में प्रवेश करने में सहायक हो सकता है। ज्ञान को सुख का कारण बताया गया, प्रकाशमान ज्ञान से पदार्थों के स्वरूप अच्छी तरह जान सकता है, देख सकता है तथा सच्चा श्रद्धान हो सकता है। सच्चा श्रद्धान होने पर सम्यक् दृष्टि या मोक्षमार्गी माना जाता है। यह सच्चे सुख की जड़ है।

प्रस्तुत पुस्तक "**श्री शांति चक्र कल्प पूजा विधान**" है। विधानों में यदि पूर्व में शुद्धि करने से शुद्ध एवं सातिशय पुण्य की प्राप्ति होती है और शुद्धि रहित विधान के करने पर पाप की अधिकता और पुण्यार्जन कम होता है। जैन शासन मण्डप या मण्डल माँड़कर विधान करने पर मन लगता है, रुचि बढ़ती है तथा अपने बीच में योग्य मंत्र द्धारा पाषाण भी भगवान पूज्य हो जाता है। पुण्य की प्राप्ति में न्यायक कारण है। इस पुस्तक में मंत्रों के माध्यम से मंडप की शुद्धि तथा अन्य द्रव्य की भी शुद्धि की जाती है। स्मरण शक्ति के अभाव में यह पुस्तक सर्वोपयोगी सिद्ध होगी। और इस विधान द्धारा अपने मनोरथ सिद्ध करके पूण्यर्जिन कर सकेंगे। इसके माध्यम से कम पढ़ा-लिखा भी विधि पढ़कर अपनी साधना को साध सकता है। पदस्थ ध्यान धर्म स्थान का विषय है और मंत्रों का उच्चारण या ध्यान भी सहज हो जाता है। अत: गृहस्थ धर्म के लिए उत्तम पुस्तक है। मेरा उनको शुभ आशीर्वाद है।

— आचार्य सन्मतिसागर

नरवाली, 3 अगस्त, 2002

शांति चक्र यन्त्र का स्वरूप

सर्वप्रथम यंत्र के मध्य भाग में एक कर्णिका बनानी चाहिये, फिर वलय देकर उसके बाहर चार दिशा और चारों विदिशाओं में अष्टदलाकार कमल बनाना चाहिये, फिर उसके बाहर वलय देकर षोड़षदल कमल, उसके बाहर वलय देकर चौबीस दल का कमल बनाना चाहिए, फिर उसके बाहर वलय देकर बत्तीस दल का कमल बनाना चाहिए, फिर उसके बाहर वलय देकर पूर्व-दक्षिण-पश्चिम-उत्तर इन चारों दिशाओं में भद्र के आकार के चार द्वार के दरवाजे बनाने चाहिए, फिर एक-एक द्वार के दोनों ओर तीन-तीन त्रिशूलाकार वज्र बनाना चाहिए, इस प्रकार चारों ओर के उन आठ त्रिशूलों के चौबीस क्षोभ करना चाहिए, फिर चारों विदिशाओं के खल के बाहर दो-दो अलग-अलग क्षिति मण्डल के लिए त्रिशूलाकार वज्र बनाना चाहिए और उसके आठ वज्र लिखना चाहिए। इस प्रकार क्षिति मण्डल करि सहित शांति चक्र यंत्र का उद्धार करना चाहिए।

अब सबसे पहले कर्णिका के मध्य भाग में ''ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः'' यह मंत्र लिखना चाहिए फिर उसी कर्णिका में उस मंत्र के पूर्व दिशा की ओर ''ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः'' यह मन्त्र लिखना चाहिए, फिर उसके दक्षिण दिशा की ओर ''ॐ ह्रीं सूरिभ्यो नमः'' लिखना चाहिए, पश्चिम दिशा में ''ॐ ह्रीं पाठकेभ्यो नमः'' लिखना चाहिए तथा उत्तर दिशा की ओर ''ॐ ह्रीं सर्व साधुभ्यो नमः'' लिखना चाहिए। इसके बाद उसी कर्णिका में चार विदिशाओं के चार दलों में से अग्निकोण के दल में ''ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः'' नैऋत कोण में ''ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः'' वायव्य कोण में '' ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः'' लिखना चाहिए तथा ईशान कोण में ''ॐ ह्रीं सम्यक् तपसे नमः'' लिखना चाहिए। यह कर्णिका में बने हुए नौ कोठों का उद्धार है। इस कर्णिका के बाहर के वलय में जो अष्टदलाकार कमल है, उसमें से पूर्व के दल में ''ॐ ह्रीं जयायै स्वाहा'', दक्षिण के दल में ''ॐ ह्रीं विजयायै स्वाहा'', पश्चिम के दल में ''ॐ ह्रीं अजितायै स्वाहा'', उत्तर के दल में ''ॐ ह्रीं अपराजितायै स्वाहा'' लिखना चाहिए। फिर अग्निकोण में

''ॐ ह्रीं जृभायै स्वाहा'', नैऋत कोण में ''ॐ ह्रीं मोहायै स्वाहा'', वायव्य कोण में ''ॐ ह्रीं स्तंभायै स्वाहा'' तथा ईशान कोण में ''ॐ ह्रीं स्तंभिन्यै स्वाहा'' लिखना चाहिए। इन सब मंत्रों को प्रणव मायाबीजपूर्वक होमान्त लिखना चाहिए। इस प्रकार कर्णिका के बाहर अष्ट दल कमल भर देना चाहिए।

उसके बाहर सोलह दल का कमल है सो उसमें पूर्व दिशा से प्रारम्भ कर अनुक्रम से सोलह विद्या देवियों के नाम लिखने चाहिए, यथा ''ॐ ह्रीं रोहिण्यै स्वाहा'' ''ॐ ह्रीं प्रज्ञप्त्यै स्वाहा'' इस प्रकार सोलह दलों में सोलह विद्या देवियों को स्थापन करना चाहिए। इस प्रकार सोलह दल कमल को भर देना चाहिए।

तदन्तर उस सोलह दल कमल के बाहर जो चौबीस दल का कमल है उसमें पूर्व दिशा से प्रारम्भ कर अनुक्रम से चौबीस शासन देवियों को स्थापन करना चाहिए, यथा ''ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी देव्यै स्वाहा''। इस प्रकार चक्रेश्वरी से लेकर सिद्धायनी पर्यन्त चौबीसों शासन देवियों को स्थापन करना चाहिए, इस प्रकार चौबीस दल कमल को भर देना चाहिए।

चौबीस दल कमल के बाहर वलय के बाद बत्तीस दल कमल है, सो उसमें भी पूर्व दिशा से प्रारम्भ कर अनुक्रम से बत्तीस इन्द्रों को स्थापन करना चाहिए। इन सब देवियों को तथा इन्द्रों को ब्रह्म माया बीज से प्रारम्भ कर होमान्त (जिसके आदि में ॐ ह्रीं यह ब्रह्म और माया बीज हो तथा मध्य में चतुर्थी विभक्ति सहित देवी या इन्द्र नाम हो और अन्त में होमान्त अर्थात् होम के अन्त में कहे जाने वाला स्वाहा शब्द हो। इस प्रकार सब देवियों को स्थापन करना चाहिए) लिखना चाहिए। यथा ''ॐ ह्रीं असुरेन्द्राय स्वाहा'' इस प्रकार बत्तीसों इन्द्रों को स्थापन करना चाहिए और इस बत्तीस दल कमल को भर देना चाहिए।

तदन्तर चारों दिशाओं के चारों द्वारों के दोनों ओर लिखे हुए चौबीस वज्रों में गोमुख आदि चौबीस यक्षों को वेद शक्ति बीज सहित तथा होमान्त लिखना चाहिए। यथा '' ॐ ह्रीं गोमुख यक्षाय स्वाहा'' इस प्रकार पूर्व दिशा से प्रारम्भ कर पश्चिम की ओर होते हुए अनुक्रम से लिखना चाहिए। इस प्रकार एक-एक दिशा में छः-छः यक्ष लिखने चाहिए।

तदन्तर पूर्वादिक चारों दिशाओं में तथा चारों विदिशाओं में तथा पूर्व और पश्चिम में प्रणव माया बीज आदि होमान्त युक्त इन्द्रादिक दश् दिक्पालों

को स्थापन करना चाहिए, यथा— ''ॐ ह्रीं इन्द्राय स्वाहा'' पूर्वे ''ॐ ह्रीं अग्नीन्द्राय स्वाहा'' आग्नेयाम् ''ॐ ह्रीं यमाय स्वाहा'' दक्षिणे, इस प्रकार क्रम से लिखना चाहिये।

तदन्तर पूर्वादिक चारों दिशाओं तथा चारों विदिशाओं में और दुबारा पूर्व दिशा में इस प्रकार नौ स्थानों में प्रणवपूर्वक स्वाहा पर्यन्त आदित्यादिक नवग्रहों को लिखना चाहिए और उनको पूर्व दिशा से प्रारम्भ कर अनुक्रम से पश्चिम की ओर घूमते हुए पूर्व दिशा तक लिखना चाहिए।

फिर सबके बाहर ''ॐ ह्रीं आं क्रौं अनावृताय स्वाहा'' यह मन्त्र लिखकर अनावृत यक्ष को स्थापन करना चाहिए।

तदन्तर भूमण्डल देकर अष्ट वज्र सहित क्षिति बीज और अष्ट इन्द्रायुध के बीजकरि सहित लिखना चाहिए।

इस प्रकार यह यन्त्र विधि है। इस प्रकार यन्त्र बनाकर आगे लिखी विधि के अनुसार पूजा करनी चाहिए।

यह महायंत्र धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की सिद्धि करने वाला है इसलिए इसका नित्य पूजन करना चाहिए। यह सामान्य शांतिचक्र है वृहत् शांति चक्र और है, जो बहुत बड़ा है सो अन्य शास्त्रों से जान लेना चाहिए। उसमें इससे भी बहुत विशेष रचना है।

यह यन्त्र अनेक गुणों से सुशोभित है। यह यंत्र पूजा करने वालों के अनेक विघ्न समूहों को, अनेक क्षुद्रोपद्रवों को, अनेक परकृत उपद्रवों को, अनेक क्षाम डामरादिक कृत्रिम दोषों को अनेक अरि, मारी, रावल चौरादिक कृत घोर उपद्रवों को, समस्त अरिष्टों को, अपमृत्यु को, डाकिनी-शाकिनी तथा आदित्यादिक दुष्ट ग्रहों को, भूत, वेताल, राक्षस, पिशाच आदि को तथा स्थावर जंगम विषादिकों को तथा अनेक दुर्व्याधियों को दूर करता है, अनेक प्रकार के दुःख समूहों को दूर करता है तथा मनोवांछित सुखों को प्राप्त करता है। यह यंत्र महापुण्य का कारण है, ऐसा जानकर इस यंत्र की नित्य पूजन करनी चाहिए। यह यंत्र भाग्यहीनों को अत्यन्त दुर्लभ है। इसलिए बुद्धिमानों को इसके ऊपर लिखे मंत्र के महत्व को समझ लेना चाहिए।

— ग. आ. कुन्थुसागर

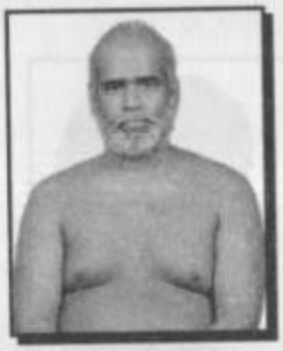

अपनी बात

''शांति चक्र मण्डल चक्र पूजा विधान'' हिन्दी में पद्य रचना करने का मुझे सौभाग्य मिला। इसका संस्कृत में संकलन प. पू. दिगम्बराचार्य आदिसागरजी महाराज (अंकलीकर) के पट्टशिष्य प. पू. समाधि सम्राट अष्टादश भाषाविज्ञ, तीर्थवन्दना भक्त शिरोमणि श्री 108 आचार्य महावीरकीर्तिजी महाराज सा. के शिष्य प. पू. गणाधिपति श्री 108 गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज सा. द्वारा मुझे पढ़ने को मिला। मैंने इसे सर्वप्रथम आठ अगस्त उन्नीस सौ अट्ठानवे को दिगम्बर जैन समाज की ऐतिहासिक नगरी सागलपुर (सागवाड़ा) में जूना मंदिर देवाधिदेव भगवान ऋषभदेव जिनालय में कराया था।

तभी मेरे परिणामों में इस पूजा विधान को सरल छन्दोबद्ध सुन्दर स्वर लहरी में निबद्ध करने का संकल्प जागृत हुआ था, परन्तु बीच में नव देवता विधान, वास्तु विधान, पंच परमेष्ठी विधान, पंचकल्याणक विधान, ऋषि मण्डल विधान, शांति विधान, याग मंडल विधान को लिखने का अवसर आया। इसीलिए इस विधान को लिखने में देरी हुई, परन्तु मुझे विश्वास है इस शांतिमंडल कल्प पूजा विधान को कोकिल कण्ठ के द्वारा सुन्दर संगीत की व्यवस्था से जो भी पढ़ेगा उसके परिणाम निश्चित रूप से शुभ होंगे, साथ ही यह विधान महातन्त्र -मन्त्र से परिपूर्ण है इसलिए जो भी गृहस्थ विघ्न शांति हेतु विधि-विधानपूर्वक इसे करेगा उसके विघ्न अवश्य शांत होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

इस पूजा विधान में मुझे वैद्य पं. विमल प्रकाश शास्त्री ''विधानाचार्य'' का पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त हुआ है। वे पूर्ण रूप से आशीर्वाद के पात्र हैं। साथ ही धर्मनिष्ठा डॉ. सविता जैन ने अपने फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित कराकर तथा संपादन करके कुशल संपादक होने का परिचय दिया है, वे भी जिनवाणी की सेवा के लिए पूर्ण आशीर्वाद की पात्र हैं।

— बालाचार्य योगीन्द्रसागर ''सागर''

विमलाञ्जलि

विमल चरण में विमल भाव से विमल रूप से करूँ प्रणाम,
विमल विमल पदवी को पाऊँ विमल भजूँ मैं आठों याम।
विमल गुणों के जो निधान है विमल रूप है मन जिनका,
''विमल प्रकाश'' नमावें शिर को विमल हाथ होवे इनका॥

विमल भाव से, विमल गुरु के प्रपौत्र शिष्य के विमल चरणों में, विमलतापूर्वक, विमल प्रणाम करते हुए, विमल भावना सहित विमल भाव बनाने वाली विमलचर्या के बारे में कुछ कहूँ तो विमल सूर्य को मल सहित दीपक दिखाने के समान सिद्ध होगी।

गुरुदेव हमेशा विमल होते हैं तथा मल सहित संसारी प्राणियों को भी विमल करने की क्षमता रखते हैं, इसलिए तो विमल चरण जहाँ भी पड़ते हैं वहाँ अन्दर-बाहर का मल हटकर विमलता आ जाती है, विमल विचार उन्नायक विमल देशना के दाता श्री 108 गुरुदेव बालाचार्य योगीन्द्रसागरजी महाराज सा. ने विमल भावों से विमल लेखनी के द्वारा विमल चित्त लगाकर इस विमल शान्ति मंडल कल्प पूजा विधान का लेखन कार्य किया। मुझे विश्वास है मानव के समल भाव निश्चित रूप से विमलभाव होंगे। निश्चित ही समल अन्धकार नष्ट होकर इस पूजा के द्वारा श्रावक के हृदय में श्रेष्ठ विमल प्रकाश होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

गुरुपादोपासक

प्रतिष्ठाचार्य

पं. विमलप्रकाश जैन ''शास्त्री''

सागवाड़ा (राजस्थान)

सम्पादकीय

सम्पादन कार्य कोई सहज कार्य नहीं है और फिर जिसमें धार्मिक ग्रन्थों का संपादन करना तो बहुत ही कठिन बात होती है परन्तु मेरा ऐसा विश्वास है कि कोई भी कठिन से कठिन कार्य हो तो वह गुरु कृपा से सहज हो जाता है। मुझे पूज्य गुरुदेव खण्ड विद्या धुरन्धर बालाचार्य योगीन्द्रसागरजी म. सा. जैसे महामनीषी ने धार्मिक क्षेत्र में आने का साहस प्रदान किया और उनके ही आशीर्वाद से मुझे सम्पादन कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। पूज्यश्री एक श्रेष्ठ साहित्यकार होने के साथ-साथ "कवि रवि" भी हैं। अभी तक लगभग 82 ग्रंथों का कुशल लेखन कार्य कर समाज को दिशा-बोध दिया है, परन्तु गत तीन वर्षों से पूज्यश्री का एक ही लक्ष्य है भक्ति। वे अपनी देशना में यही कहते हैं कि "वर्तमान का अध्यात्म अहंकार को जन्म देने वाला है और इस पंचम काल में परमात्मा की पूजा-भक्ति-आराधना ही सर्वश्रेष्ठ कार्य है जिससे कि मानव भक्ति के द्वारा निजात्म शक्ति की प्राप्ति करने में सामर्थ्यवान हो सकेगा"।

बस इसी लक्ष्य को लेकर प्राचीन आचार्यों की धरोहर को जैन जगत के श्रावकों को बताने, परिचय कराने और लाभ उठाने के लिए समाज के समक्ष रखा है। अभी तक पूज्यश्री ने अपने सुन्दर शब्दों एवं छन्दोबद्ध करके लगभग चौदह पूजा विधानों का रचनात्मक कार्य किया है। उसी शृंखला में यह **"श्री शान्ति चक्र मण्डल कल्प पूजा विधान"** जो कि आपके हाथों में है, यह भी एक बालाचार्यश्री की अनुपम कृति है।

इस कृति के लिए हम कृतार्थ हैं, हम भविष्य में गुरुदेव से भक्ति करने की प्रेरणा का भाव रखते हैं।

डॉ. सविता जैन
प्रधान संपादिका
"आदित्य आदेश" मासिक पत्र
उज्जैन (म. प्र.)

श्री शान्ति चक्र मण्डल कल्प विधान का माण्डला माँडने की विधि एवं पूजा विधि

इस विधान के मंडल में कुल नौ वलय बनते हैं तथा इन नौ वलयों में कुल 148 कोष्ठक होते हैं अर्थात् इस विधान में एक सौ अड़तालीस (148) अर्घ्य होते हैं। यथा—

प्रथम वलय में	24 कोष्ठक	पंच परमेष्ठी व अर्हतादि अर्चना
द्वितीय वलय में	8 कोष्ठक	जयादि अष्ट देवता अर्चना
तृतीय वलय में	16 कोष्ठक	षोडश विद्या देवता अर्चना
चतुर्थ वलय में	24 कोष्ठक	चतुर्विंशति शासन देवता अर्चना
पंचम वलय में	32 कोष्ठक	द्वात्रिंशद् इन्द्र अर्चना
षष्ठम वलय में	10 कोष्ठक	दश दिक्पाल अर्चना
सप्तम वलय में	24 कोष्ठक	चतुर्विंशति यक्ष अर्चना
अष्टम वलय में	9 कोष्ठक	नवग्रह अर्चना
नवम वलय में	1 कोष्ठक	अनावृत यक्ष अर्चना

इस प्रकार 9 वलय व 148 कोष्ठक वाला मंडल नौ प्रकार के धान्यों से माँडना चाहिए। फिर मंडल को अच्छी तरह सजाकर तोरण, चन्दोरवा, पिछवारी लगानी चाहिए तथा मंडल पर अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, चार कोनों में चार कलश की स्थापना करनी चाहिए, फिर अष्ट द्रव्य सामग्री बनाकर, पंचामृताभिषेक की तैयारी करके इन्द्रादि सकलीकरण क्रिया करके जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक करके मण्डल प्रतिष्ठा, द्वारपालानुकूलन, पंचकुमार आह्वानन आदि मण्डल प्रतिष्ठा विधि करनी चाहिए, मंगल कलश स्थापित कर अखण्ड दीपक की आरती स्थापना करवानी चाहिए।

तदुपरान्त देव-शास्त्र-गुरु समुच्चय पूजा, सिद्ध पूजा, कलिकुण्ड पूजा करके मूल विधान की पूजा करनी चाहिए।

सर्वप्रथम ताँबे पर यंत्र खुदवाकर (सोना या चाँदी के पत्र पर भी बना सकते हैं) एवं एक यंत्र भोज पत्र पर विधान में लिखे द्रव्यों से जो क्रिया

करना हो उसके अनुसार स्याही बनाकर स्वर्ण कलम से यंत्र लिखकर मंडल पर रखना चाहिए, फिर पूजा करें। पहले सोलह हजार मूलमंत्र का शुक्ल पक्ष के सोलह दिन के पक्ष में प्रत्येक दिन सोलह हजार जाप्य सुगंधित पुष्पों से करें। विधान के बाद दशांश आहुति रूप हवन करना चाहिए, तब मंत्र सिद्ध होता है, फिर नित्य 108 मंत्र का जाप्य करने से इच्छित कार्य की सिद्धि होती है।

इस यंत्र को आगे लिखी विधि के अनुरूप भोजपत्र, घण्टी आदि पर लिखवाकर पूजन विधान में प्रतिष्ठित करके विधि के अनुसार उपयोग करना चाहिए अथवा आगे लिखे अनुसार लिखकर उसका प्रयोग करना चाहिए।

शान्ति मंडल यंत्र

इस यंत्र के वलय बनाकर किस वलय में कौनसा नाम लिखना है इस विषयक जानकारी :-

यंत्र के प्रथम वलय में

मध्य भाग में	-	अर्हत् (ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः)
पूर्व भाग में	-	सिद्ध (ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः)
दक्षिण भाग में	-	सूरि (आचार्य) (ॐ ह्रीं सूरिभ्यो नमः)
पश्चिम भाग में	-	उपाध्याय (ॐ ह्रीं पाठकेभ्यो नमः)
उत्तर भाग में	-	साधु (ॐ ह्रीं सर्व साधुभ्यो नमः)
आग्नेय दिशा में	-	ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः
नैऋत कोण में	-	ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानाय नमः
वायव्य कोण में	-	ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः
ईशान कोण में	-	ॐ ह्रीं सम्यक् तपसे नमः

यन्त्र के द्वितीय वलय में

वलय के पूर्व भाग से प्रारम्भ करते हुए क्रमशः

ॐ ह्रीं जयायै स्वाहा, ॐ ह्रीं विजयायै स्वाहा, ॐ ह्रीं जृभायै स्वाहा, ॐ ह्रीं मोहायै स्वाहा, ॐ ह्रीं अजितायै स्वाहा, ॐ ह्रीं स्तंभायै स्वाहा, ॐ ह्रीं अपराजितायै स्वाहा, ॐ ह्रीं स्तंभिन्यै स्वाहा।

(इन आठ देवियों के नाम लिखने चाहिये।)

यन्त्र के तृतीय वलय में

वलय के पूर्व भाग से प्रारम्भ करते हुए क्रमश:

ॐ ह्रीं रौहिण्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं प्रज्ञप्त्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं वज्र श्रृंखलायै स्वाहा, ॐ ह्रीं वज्राकुंशायै स्वाहा, ॐ ह्रीं अप्रतिचक्रायै स्वाहा, ॐ ह्रीं पुरुषदक्षायै स्वाहा, ॐ ह्रीं काल्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं महाकाल्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं गांधायै स्वाहा, ॐ ह्रीं गौर्ये स्वाहा, ॐ ह्रीं ज्वालामालिन्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं वेरोट्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं अच्युतायै स्वाहा, ॐ ह्रीं अपराजितायै स्वाहा, ॐ ह्रीं मानसी देव्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं महामानसी देव्यै स्वाहा।

इन सोलह विद्या देवियों के नाम लिखने चाहिए।

यंत्र के चतुर्थ वलय में

वलय के पूर्व भाग से प्रारम्भ करते हुए क्रमश:

ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी देव्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं रोहिण्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं प्रज्ञप्त्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं वज्र श्रृंखलायै स्वाहा, ॐ ह्रीं पुरुषदत्तायै स्वाहा, ॐ ह्रीं मनोवेगाय स्वाहा, ॐ ह्रीं काल्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं महाकाल्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं ज्वालामालिन्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं मानव्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं गोर्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं गांधार्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं वैरोट्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं अनन्तमत्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं मानसी देव्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं जयायै स्वाहा, ॐ ह्रीं विजयायै स्वाहा, ॐ ह्रीं अपराजितायै स्वाहा, ॐ ह्रीं बहुरूपिण्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा, ॐ ह्रीं कुष्माण्डन्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं पद्मावत्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं सिद्धान्यै स्वाहा।

इन चौबीस जिन शासन यक्षियों के नाम लिखने चाहिये।

यंत्र के पंचम वलय में

वलय के पूर्व भाग से प्रारम्भ करते हुए क्रमश:

ॐ ह्रीं असुरेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं नागेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं विद्युदिन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं अग्निन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं वातेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं स्तनितेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं उदधीन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं द्वीपेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं दिगीन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं महोरगेन्द्राय

स्वाहा, ॐ ह्रीं गन्धर्वेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं यक्षेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं भूतेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं आदित्येन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं ईशानेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं सानत्कुमारेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं माहेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं शुकेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं शतारेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं आनतेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं आरणेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्राय स्वाहा।

(इन बत्तीस इन्द्रों के नाम लिखने चाहिये।)

यन्त्र के षष्ठ वलय में

वलय के पूर्व भाग से प्रारम्भ करते हुए क्रमश:

ॐ ह्रीं गोमुखाय स्वाहा, ॐ ह्रीं महायक्षाय स्वाहा, ॐ ह्रीं त्रिमुखाय स्वाहा, ॐ ह्रीं यक्षेश्वराय स्वाहा, ॐ ह्रीं तुंबरवै स्वाहा, ॐ ह्रीं कुसुमाय स्वाहा, ॐ ह्री वरनंदिनै स्वाहा, ॐ ह्रीं विजयाय स्वाहा, ॐ ह्रीं अजिताय स्वाहा, ॐ ह्रीं ब्रह्मेश्वराय स्वाहा, ॐ ह्रीं कुमाराय स्वाहा, ॐ ह्रीं षण्मुखाय स्वाहा, ॐ ह्रीं पातालाय स्वाहा, ॐ ह्रीं किन्नराय स्वाहा, ॐ ह्रीं किंपुरुषाय स्वाहा, ॐ ह्रीं गरूड़ाय स्वाहा, ॐ ह्रीं गन्धर्वाय स्वाहा, ॐ ह्रीं महेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं कुबेराय स्वाहा, ॐ ह्रीं वरुणेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं विद्युत्प्रभाय स्वाहा, ॐ ह्रीं सर्वाण्हाय स्वाहा, ॐ ह्रीं धरणेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं मातंगाय स्वाहा।

(इन चौबीस जिन शासन यक्षों के नाम लिखने चाहिए।)

यन्त्र के सप्तम वलय में

वलय के पूर्वादि क्रम से प्रारम्भ करते हुए क्रमश:

ॐ ह्रीं इन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं अग्नये स्वाहा, ॐ ह्रीं यमाय स्वाहा, ॐ ह्रीं नैऋताय स्वाहा, ॐ ह्रीं वरुणाय स्वाहा, ॐ ह्रीं पवनाय स्वाहा, ॐ ह्रीं कुबेराय स्वाहा, ॐ ह्रीं ईशानाय स्वाहा, ॐ ह्रीं धरणेन्द्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं सोमाय स्वाहा।

(इस प्रकार दश दिक्पालों के नाम लिखने चाहिये।)

यन्त्र के अष्टम वलय में

वलय के पूर्व भाग से प्रारम्भ करते हुए क्रमश:

ॐ ह्रीं आदित्याय स्वाहा, ॐ ह्रीं सोमाय स्वाहा, ॐ ह्रीं भौमाय स्वाहा, ॐ ह्रीं बुधाय स्वाहा, ॐ ह्रीं बृहस्पत्यै स्वाहा, ॐ ह्रीं शुक्राय स्वाहा, ॐ ह्रीं शनैश्चराय स्वाहा, ॐ ह्रीं राहवे स्वाहा, ॐ ह्रीं केतवै स्वाहा।

(इस प्रकार नवग्रहों के नाम लिखने चाहिये।)

यन्त्र के नवम् वलय में

वलय के ईशान कोण में अनावृत यक्ष का नाम लिखना चाहिये।

इस प्रकार इस विधान के नौ वलय के कुल 148 कोष्ठक बनाकर उनमें ऊपर बताये अनुसार नाम लिखने चाहिए।

महाशांति यन्त्र के मन्त्र के विधान-साधन विधि कल्प

मूल मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा अस्य देवदत्तस्य (यजमान का नाम) सर्वोपद्रव .....शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मूल मन्त्र है, इसका एक सौ आठ बार जाप करें तथा जाप करने वाला व्यक्ति देवदत्त के स्थान पर अपना नाम जोड़ देवें।

शांति कर्म

ज्वररोगोपशान्त्यर्थं श्वेतवर्णे यन्त्रमुद्धार्य सम्पूज्य पश्चिमाभिमुख: सूरि:, ज्ञानमुद्रा पद्मासनं श्वेतवर्णै जापैरष्टोत्तरशतं जपेत् पश्चिम रात्रौ, त्रिपंचसप्त दिनाभ्यन्तरे ज्वरो मुच्चति यैवमन्येषामपि रोगाणामनुष्ठेयम्।

ज्वर रोग की शांति के लिए बुद्धिमान पुरुष रात्रि के पिछले भाग में श्वेत वर्ण से यन्त्र खींचकर उसकी पूजा कर पश्चिम की ओर मुख कर ज्ञान मुद्रा धारण कर पद्मासन बैठकर श्वेत माला से 108 जाप करें। ऐसा करने से 3/5/7 दिन में ही ज्वर नाश होता है। इसी प्रकार अन्य रोगों के लिए भी जाप करें। यही शांति कर्म है।

पौष्टिक कर्म

एवं पौष्टिकेऽपि तथैव। उत्तराभिमुख इति विशेषः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अस्य देवदत्त (व्यक्ति का नाम.....) नाम धेयस्य मनः पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा। पुष्टि कर्म।

इस तरह पौष्टिक कर्म में भी ऐसा ही करें। इतना विशेष है कि इस कार्य के लिए जाप उत्तराभिमुख बैठ कर करें।

''ॐ ह्रां ह्रीं'' इत्यादि पौष्टिक कर्म में जप करने का मन्त्र है। यह पौष्टिक कर्म है ।

वशीकरण कर्म

अथ वश्य कर्मणि। रक्तवर्णेयन्त्रोद्धारः रक्त पुष्पैः। स्वस्तिकासपद्म मुद्रांकितः पूर्वाण्हे यक्षाभिमुखः। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अमुं राजानं वश्यं कुरु कुरु वषट्वाम हस्तेन मन्त्रं जपेत्।

वश्य कर्म में लाल रंग से यन्त्रोद्धार करके लाल पुष्पों से पूजा कर स्वस्तिकासन से बैठकर पद्म मुद्रा जोड़ें। उत्तर की ओर मुख करके बैठें, पूर्वाह्न के समय मन्त्र को बायें हाथ से जपें। यह वश्य कर्म है।

आकर्षण कर्म

अथा कृषि कर्मणि। रक्तवर्णेयन्त्रोद्धारः पूर्वाभिमुखो दण्डासनांकुरः मुद्रायुतः। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा एनां स्त्रियम् कर्षयाकर्षय संवौषट्॥ एवं भूतप्रेत वृष्ट्यादिनामत्या कर्षणम्।

आकर्षण कर्म यदि किसी स्त्री का करना हो तो लाल वर्ण का यन्त्र बनाकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके दण्डासन से बैठकर अंकुश मुद्रा बनाकर जाप करें। इसी प्रकार भूत-प्रेत वृष्टि आदि का भी आकर्षण करें किन्तु ध्यान रखें कि कभी भी स्त्री का आकर्षण नहीं करना चाहिए।

स्तम्भन कर्म

हरितालादि पीतवर्णे यन्त्रोद्धारः। पूजा सर्वा पीता। पीता जपमाला वज्रासनं शंखमुद्रा॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा साधकस्य एतन्नामधेयस्य क्रोध स्तम्भय स्तम्भय ठः ठः॥ एवं शार्दुलादीनां क्रोधस्तम्भनम्॥

यदि किसी के क्रोध का स्तम्भन करना हो तो हल्दी आदि के पीले रंग से यन्त्र बनाकर पीली पूजन सामग्री बनाकर पीली माला से वज्रासन में बैठकर शंख मुद्रा बनाकर मन्त्र का जाप करें तो सिंह आदि का क्रोध स्तम्भन होता है।

अतिवृष्टि स्तम्भन कर्म

ॐ हां हीं हूं हौं ह्रः अ सि आ उ सा अत्त एनां वृष्टिं स्तम्भय: ठ: ठ: इति स्तम्भनम्।

उपरोक्त विधि से ही इस मन्त्र का जाप करने से अतिवृष्टि का स्तम्भन होता है।

उच्चाटन कर्म

अथोच्चाटन कर्मणि। कृष्णवर्ण यन्त्रोद्धार:। अपराण्हे मरुदिदमुख: कुर्कुटासन: पल्लव नील जापै जप- ॐ हां हीं हूं हौं ह्रः अ सि आ उ सा देवदत्त नामधेयं अत उच्चाटय उच्चाटय फट् फट् इति जपेत्॥ एवं भूतादि नामव्युच्चाटनम्॥ इत्युच्चाटन कर्म॥

किसी का उच्चाटन करना हो तो इस कर्म में काले रंग का यन्त्र बनाकर दिन के पिछले भाग में वायव्य दिशा की ओर मुख करके कुर्कुटासन में बैठकर, पल्लव मुद्रा जोड़कर नीली माला से मन्त्र का जाप करना चाहिए।

इसी प्रकार भूतादिक का उच्चाटन किया जाता है। यही उच्चाटन कर्म है।

विद्वेष कर्म

अथ विद्वेष कर्मणि कृष्ण वर्णे यंत्रोद्धार। मध्याह्ने अग्निमुख:। कुर्कुटासनं पल्लव मुद्रा कृष्ण जाप्यैर्जप:॥ ॐ हां हीं हूं हौं ह्रः अ सि आ उ सा अनयोर्यज्ञदत्त देवदत्तनामधेययो: परस्परमतीव विद्वेषं कुरु कुरु हूं। एवं स्त्री पुरुषयोर्वा। इति विद्वेषणम्।

विद्वेष कर्म हेतु काले रंग से यन्त्रोद्धार करके मध्याह्न के समय आग्नेय दिशा की ओर मुख कर कुक्कुटासन में बैठकर पल्लव मुद्रा करें एवं काले रंग की माला से जाप करना चाहिए। यही विद्वेष कर्म है। दो व्यक्तियों में विद्वेष कराने हेतु इसी का प्रयोग किया जाता है।

अभिचार कर्म

अभिचार कर्मणि सर्प विष मिश्रैरून्मत्तर संमिश्रै: अपराह्ने ईशानदिग्मुख: कृष्ण वस्त्रो भद्रासनो वज्रमुद्रा खदिर मण्यादि कृताक्ष माल:। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा अस्य एतन्नामधेयस्य तीव्र ज्वरं कुरु कुरु घ घ । इत्युच्चारयेत्। शूल शिरोरोगाणामप्येव कर्तव्यम्। उच्चाटनादिकर्माणि धर्माधार भूतानां राजादि नाम भिलषितानि चे तदा विधेयानि।

यदि किसी को कोई रोग उत्पन्न करना हो तो इस मन्त्र का उपयोग करें, साँप के जहर से अथवा किसी मादक द्रव्य से मिश्रित काले रंग से यन्त्र खींचकर दोपहर बाद ईशान दिशा की तरफ मुख कर काले कपड़े पहनकर भद्रासन में बैठें। वज्रमुद्रा बनावें। खदिर मणि की जपमाला से ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: ..... इत्यादि मन्त्र का उच्चारण करें। सूर सिर का रोग आदि में भी इसका प्रयोग करें।

उच्चाटन आदि कर्म धर्मात्मा राजा आदि को अभिलषित हो तो करें।

द्वितीय मन्त्र विधि

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्री शांतिनाथाय सकल विघ्न हराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा अमुकस्य (नाम...) सर्वोपद्रव शांतिं लक्ष्मी लाभं च कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :- इस मन्त्र के सोलह दिन में 16000 जाप विधिपूर्वक करें, दशांश होम करें तो सिद्धि प्राप्त होती है, मन्त्र सिद्धि होती है, उपसर्ग उपद्रव दूर होता है, सर्वशांति होती है, लक्ष्मी प्राप्त होती है, यश लाभ प्राप्त होता है।

इस मन्त्र को योग्य आसन, माला, दीप, धूप, ध्यान, वायु आदि विधि से सोलह दिन का पक्ष हो उसमें प्रत्येक दिन एक-एक हजार जाप सुगन्धित पुष्प लेकर करें। इस मन्त्र का जाप शुक्ल पक्ष में ही करें, प्रत्येक दिन पूजा करके प्रत्येक दिन के जाप का दशांश होम भी कर सकते हैं अथवा सोलह दिन बाद सोलह हजार की एक साथ आहुति भी दे सकते हैं।

मन्त्र-यन्त्र विधि

मन्त्र राजमिदं सम्यग्वधानोपपत्तित: ।
जपितं जपमानाय शांतिदं श्रीकरं परम् ॥ 1 ॥

साधनोपाय मेतस्य यथोदिष्टं नर ! स्मर ।
यतो विघ्ना विनश्यन्ति सम्पद: प्राप्नुवन्ति च ॥ 2 ॥

षोडशाहे सिते पक्षे प्रारभेतादिमाद्रिदनात ।
पूर्णिमायां नयेत् पूर्तिं जप्त्वा नित्यं सहस्रश: ॥ 3 ॥

यन्त्रं सपूजयेत् पूर्वं ततो मन्त्रं जपेत् पुमान् ।
सुगन्धि कुसुमैरेतावद्रिभ: संदीप धूपयुक्त ॥ 4 ॥

झल्लरी यन्त्रोद्धार

झल्लरी द्वयमानीय तत्पृष्ठे यन्त्रमालिखेत् ।
पद्मष्टदलं कृत्वा मध्येऽर्हन्निति पूरयेत् ॥ 5 ॥

उद्ध्वं सिद्धानुदक् सूरीन् प्रागुपाध्याय सम्पदम् ।
वामे साधु पदं दत्वा दिशापत्राणि पूरयेत् ॥ 6 ॥

बह्निकोणात् समारभ्य यावदीशदलं क्रमात् ।
एसो पंच णमोयारो इत्यादि श्लोक मालिखेत् ॥ 7 ॥

पूर्वोक्तेन च मन्त्रेण परितोवेष्ट येदिदं ।
हैम्याशालाकयाचार्यो यक्षकर्दमतो लिखेत् ॥ 8 ॥

दर्पणाभिमुख यन्त्रं स्थापयेदुन्नते स्थले ।
दर्पणे पतितं यन्त्रं बिम्बमित्यभिषेचयेत् ॥ 9 ॥

जिनागारोपरिस्थाने ताऽयेज्झल्लरी मुखम् ।
पूर्व पश्चाच्च पूजाया: शांति भक्तयुक्ति पूर्वकम् ॥ 10 ॥

झल्लयध्विनिरेतस्या यावद्देशाभिव्रजेत् ।
विध्नौघः प्रलयं यायात् किं चित्रं मन्त्र साधनात् ॥ 11 ॥

शान्तिनाथ कल्प के अन्तर्गत झल्लरी यन्त्र साधन विधि

(1) इस मन्त्र राज को सम्यग् रूप से विधि-विधान से जो कोई साधक जाप्य करता है उसको शांति और अटूट लक्ष्मी प्राप्त होती है।

(2) मन्त्र साधन का जो स्वरूप कहा गया है उसी प्रकार साधना करने से और स्मरण मात्र से सर्व विघ्नों का नाश होता है एवं सम्पदा को प्राप्त करता है।

(3) इस मन्त्र को सोलह दिन के पक्ष में प्रत्येक दिन एक-एक हजार जाप करें, अर्थात् एकम से प्रारम्भ कर पूर्णिमा तक एक-एक हजार मन्त्र का जाप्य करें।

(4) प्रथम झल्लरी यन्त्र की पूजा करें, फिर साधक मन्त्र का जाप्य सुगन्धित पुष्प, दीप, धूप आदि से युक्त होकर करें।

झल्लरी यन्त्र का उद्धार

(5) दो झल्लरी (झालर घण्टा) लाकर उसके यन्त्र को लिखें, अष्ट दल का एक कमल बनावें, उस कमल के मध्य में ''अर्हं णमो अरिहन्ताणं'' लिखें।

(6) ऊपर सिद्धों को ''णमो सिद्धाणं'' फिर एक दल छोड़कर आचार्य को ''णमो आइरियाणं'' फिर एक दल छोड़कर उपाध्याय को ''णमो उव्वझायाणं'' फिर एक दल छोड़कर साधु को ''णमो लोए सव्व साहूणं'' लिखें। इस प्रकार दिशा पत्रों को लिखकर पूर्ण करना चाहिए।

(7) दिशाओं के कोणों (दलों) में क्रमशः अग्नि कोण में ''एसो पंच णमोयारो'' फिर क्रमशः ''सव्व पाव पण्णासणो'', ''मंगलाणं च सव्वेसिं'', ''पढ़मं हवइमंगलं'' इन पदों को लिखें। हींकार से तीन बार यन्त्र को वेष्टित कर देवें, ऊपर से मन्त्र को लिख देवें।

(8) पूर्वोक्त प्रकार से मन्त्र को परिवेष्टित करता हुआ, भोजपत्र पर सोने की सलाई से मन्त्र साधक यक्ष कर्दम की स्याही से यन्त्र को लिखें।

(9) इस यन्त्र को उच्च स्थान पर दर्पण के सामने स्थापन करके उस दर्पण का पंचामृताभिषेक करें, इस प्रकार घण्टों के ऊपर खुदे हुए यन्त्रों की प्रतिष्ठा करें।

(10-11) यन्त्र की पूजा करके जिन मन्दिर के ऊपर यन्त्र खुदे हुए घण्टे को बजावें। जितने क्षेत्र में उस घण्टे की आवाज पहुँचेगी उतने क्षेत्र के सर्व विघ्न उपद्रव, उपसर्ग नष्ट होते हैं। यही झल्लरी यन्त्र मन्त्र का चमत्कार प्रभाव है।

तृतीय मन्त्र विधि

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शान्तिकराय सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु कुरु ह्रीं नमः स्वाहा।

विधि :- इस मन्त्र का जाति पुष्पों से नित्य ही 108 बार जाप्य करने से सर्व मनोवांच्छित फल प्राप्त होता है।

चतुर्थ मन्त्र विधि

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शांतिनाथाय, शांति कराय, सर्वपाप प्रणाशनाय, सर्व विघ्न विनाशनाय, सर्व रोगाप मृत्यु विनाशनाय, सर्वपरकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय, सर्व क्षाम डामर विनाशनाय, ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा मम् सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र की विधि द्वितीय मन्त्र के समान ही है, उसी के समान सोलह दिन तक जाप्य करें, ब्रह्मचर्य से रहें, एकासन अथवा आचाम्ल करें, मन्त्र सिद्धि होती है।

पंचम मन्त्र विधि

ॐ णमो अरिहन्ताणं केवलिपण्णतो धम्मोसरणं पव्वज्जामि हौं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा श्रीं अर्हं नमः।

विधि :- (1) बिजौरा अथवा नारियल 108 बार इस मन्त्र से मन्त्रित कर बहत्तर दिनों तक बन्ध्या को खिलावें तो पुत्र प्राप्ति होती है।

(2) इस मन्त्र से नवीन वस्त्र को मन्त्रित कर रोगी को ओढ़ावें तो रोग का शमन होता है।

षष्ठ मन्त्र विधि

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं नम: क्लीं सर्वारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :- 108 बार जाप गुरुवार से प्रारम्भ करें, पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें, धूप खेवता हुआ प्रारम्भ कर ग्यारह हजार जाप्य करें तो सर्व शांति होती है एवं उपद्रवों का नाश होता है।

शान्तिनाथ कल्प के अन्तर्गत मन्त्र यन्त्र यक्ष सिद्धि

इस यक्ष की सिद्धि के लिए प्रथम देव-शास्त्र-गुरु के प्रति आस्थावान होना अत्यन्त आवश्यक है। जितेन्द्रिय, बलवान, जिनेन्द्र भक्त, निद्रा रहित, आलस्य रहित, उद्योगी होकर, श्रीखण्ड (सफेद चन्दन) अथवा कदम्ब अथवा लाल चन्दन की लकड़ी से सर्वलक्षण सम्पन्न छ: अंगुल की अथवा आठ अंगुल की प्रतिमा भगवान शान्तिनाथ के यक्ष की बनावें। श्यामवर्ण, चार हाथ वाला, वज्र जैसी चोंच, बराह वाहन वाला, गरुड़ यक्ष की सिद्धि हेतु यन्त्र-मन्त्र विधि इस प्रकार से है —

एक वलय आठ दल का, दूसरा वलय बारह दल का, तीसरा सोलह दल का, इस प्रकार तीन वलय बनावें। इसमें यन्त्र बनाने के लिए द्वितीय वलय से प्रारम्भ कर **ण्लम्लो अरहंत्ताण्लं, णलम्लोस्लिध्लाण्लं, ण्लम्लो आप्लरि य्लाण्लं, ण्लम्लो उव्जइल्लाटलाण्लं ऐसा लिखकर ण्लम्लो ण्लोम्ले स्लव्ल स्लाह्लूणं वेष्टित करें उसके बाहर वलय में ह्रदयं पह्रदयं महादिगारे गरुड़ यक्षाय स्वाहा।** विदिशा में गरुड़ यक्षिणी स्वाहा, लिखकर वलय के कोठों में जयादि अष्ट देवियों का नाम लिखकर बाहरी वलय में इस मन्त्र को लिखें —

ॐ नमो भगवते सर्वेन्द्राय किन्नर किं पुरुष गरुड़ गांधर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच मर्दनाय प्रबल प्रभवनाय अनेक युद्ध विनाशनाय,

धर्म चक्र धराय अनेक मुद्रा प्रणाशनाय धर धर धीरिणि धीरिणी अमुकं वशमानाय यक्षाधिपते शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

यक्ष प्रतिमा के आगे महान पूजा करके पंचमी अथवा दशमी अथवा पूर्णिमा को शुभ बार, शुभ नक्षत्र में पंच परमेष्ठि की पूजा करके सकलीकरण सहित यज्ञोपवीत धारण करता हुआ मन्त्र का जाप्य प्रारम्भ करें, सतत पूजा करते हुए तीन लक्ष अथवा दस लक्ष अथवा बारह लक्ष जाप्यपूर्वक सेवा करते हुए कृष्ण पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ करके क्षीरी वृक्ष की लकड़ी (समीधा) लेकर अग्नि जलावें। घी, गुड़, दूध से होम करें। जप को मौन व्रती होकर अमावस्या से तीन रात्रि तक जाप करता हुआ सूर्योदय काल में गंध, पुष्प, धूप, दीप, पूवा लड्डू आदि नैवेद्य को लेकर नदी के प्रवाह में गले के पानी तक अन्दर खड़े होकर कनेर के लाल पुष्प लेकर (पद्म पुष्प) पानी के अन्दर एक-एक पुष्प के ऊपर मन्त्र जाप्य करता हुआ पुष्प पानी में डालें, तब साधक के ऊपर बहुत उपसर्ग होता है लेकिन साधक उपसर्ग से डरे नहीं। यदि डर जावे तो पुनः सम्पूर्ण विधि से जाप्य करें।

इस प्रकार जप करने से उपसर्ग दूर हो जायेगा, दो पुष्प के ऊपर (प्रति श्रोत मांगच्छंतः) एक फिर भी न श्रोतंगच्छति। दोनों पुष्पों को अलग-अलग ग्रहण करें।

जो ग्रहण करने में नहीं आवे वो क्रियाहीन हो जाता है, उन दोनों को भी ग्रहण करके अपने स्थान पर आ जाना चाहिए। अनुश्रोत पुष्प को द्वार पर रखकर प्रति श्रोत पुष्प को यक्ष प्रतिमा के आगे रखकर बहुत लड्डू आदि से यक्ष की पूजा करके यक्ष के मस्तक पर हाथ से पुष्प को डालें। वह पुष्प हाथ पर ठहर गया तो पुनः उसी प्रकार मन्त्र का जाप करते हुए पुष्प डालें।

इस जप से उस यक्ष प्रतिमा समुधृत्य अंजलि प्रतिशति तत्समेव दीव्य स्त्री सर्वलक्षणों से सम्पन्न सर्वाभरणों से भूषित लाल वर्ण की नग्न रूप में आकर कहेंगी कि मैं तुम्हारी चाकर हूँ, ऐसा कहती हुई आगे खड़ी रहेगी, तब साधक को कहना चाहिए की मेरी इच्छा पूर्ति करो। उसके बाद सिद्ध भक्ति करके महान पूजा करें।

यन्त्र रचना की द्वितीय विधि

वलय के बाहर यजादि वेष्टित करें, बाहर की दिशाओं में चार क्ष कार से वेष्टित करें, विदिशाओं में णि चतुष्टय को लिखकर वलय के कोठों में यजादि वेष्टित करें, बाहर के वलय में स्वकार लिखें, फिर बाहर के कोटर में यजादि लिखें, बाहर वलय के अन्दर ह कार लिखकर पुन: वलय के अन्दर यजादि लिखें, उसके बाहर के वलय में ॐ नमो रत्नत्रयाय नम: श्चंडवज्र पाणये महायक्ष सेनापतये सुरु-सुरु फिरु-फिरु पुरु-पुरु, लहु-लहु, दहं-दहं पच-पच गृह्ण-गृह्ण अमुकं कार्यं वश्यं करोतु स्त्रीणां रूपेण वज्र क्रोधं वा ज्ञापयति स्वाहा।

इस मन्त्र से वेष्टित करके इसी मन्त्र से पूजा करनी चाहिए, जाप्य भी इसी मन्त्र का करना चाहिए, उसके बाह्य वलय में महादिशाओं में क्षिप, ॐ स्वाहा लिखकर विदिशाओं में य र ल व लिखें, वलय के कोठों में यजादि लिखें, वेष्टित करें, उसके वलय में षोडश दल करके उन दलों के अन्दर में वज्र और षोडश स्वर लिखें, उसके बाहर में चार कोने वाले दो मण्डल बनावें, उन मण्डलों के अन्दर ग, म, ल, व, र, यू इस प्रकार पिण्डाक्षर लिखकर उसके बाहर में पृथ्वी वज्र सहित लिखकर कोनों में क्षि कार चतुष्टय लिखें।

— बालाचार्य योगीन्द्रसागर ''सागर''

श्री देव-शास्त्र-गुरु समुच्चय पूजा

स्थापना (नरेन्द्र छन्द)

देव शास्त्र गुरुदेव हमारे तीनों जग विख्याता,
परम पूज्य हैं तीनों ही ये ऐसा आगम गाता।
तीन रतन के दाता हैं इनको मैं पधराऊँ,
आह्वानन स्थापन करके पूजा पाठ रचाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक (कामिनी छन्द)

पंच तीर्थ का सुनीर, झारी में भरायके,
तीन धार मैं करूं, चरण चित्त लायके।
देव शास्त्र गुरुदेव, सर्वशक्तिमान हो,
पूजता त्रियोग से, आत्म उत्थान हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा॥ 1॥

केशरादि अष्टगंध, मैं प्रभु घिसाइया,
भव का ताप नाश हो, चरण में चढ़ाइया।
देव शास्त्र गुरुदेव, सर्वशक्तिमान हो,
पूजता त्रियोग से, आत्म उत्थान हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो भवाताप विनाशनाय गन्धम् निर्वपामीति स्वाहा॥ 2॥

अखण्ड पद प्राप्ति को, अखण्ड शालि लाऊं मैं,
चरण में पुञ्ज धार, आत्म सौख्य पाऊं मैं।

देव शास्त्र गुरुदेव, सर्वशक्तिमान हो,
पूजता त्रियोग से, आत्म उत्थान हो ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ 3 ॥

बकुल मालती गुलाब, पुष्प गन्ध ले लिये,
कामदेव नाश हो, एक प्रार्थना किये।
देव शास्त्र गुरुदेव, सर्वशक्तिमान हो,
पूजता त्रियोग से, आत्म उत्थान हो ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ 4 ॥

भांति-भांति का बनाय, शुद्ध नैवेद्य मैं,
चरण में चढ़ाय कर, पाऊँ पद अबेध्य मैं।
देव शास्त्र गुरुदेव, सर्वशक्तिमान हो,
पूजता त्रियोग से, आत्म उत्थान हो ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ 5 ॥

दीप कर्पूर का, नाथ मैं जलाइया,
दीप्यमान ज्ञान हो, भावना मैं भाइया।
देव शास्त्र गुरुदेव, सर्वशक्तिमान हो,
पूजता त्रियोग से, आत्म उत्थान हो ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ 6 ॥

धूप शुद्ध लाय के, अग्नि में खेऊं मैं,
अष्ट कर्म नाश हो, आप चर्ण सेऊं मैं।

देव शास्त्र गुरुदेव, सर्वशक्तिमान हो,
पूजता त्रियोग से, आत्म उत्थान हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा॥ 7॥

आम अमरूद फल, सर्व ऋतु के लिये,
मोक्ष फल दीजिये, अर्चना हम किये।
देव शास्त्र गुरुदेव, सर्वशक्तिमान हो,
पूजता त्रियोग से, आत्म उत्थान हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा॥ 8॥

वारि गंध शालि पुष्प, आदि का अर्घ ले,
एक बस भावना, सिद्ध पदवी मिले।
देव शास्त्र गुरुदेव, सर्वशक्तिमान हो,
पूजता त्रियोग से, आत्म उत्थान हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय जल-फलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 9॥

दोहा

जिन वच जैसा शुद्ध ले, गुरु जैसा गम्भीर।
जिन श्रुत सा शीतल लिया, प्रासुक मैंने नीर॥ 1॥

शान्तये शान्ति धारा...

स्याद्वाद बगिया खिली, उससे लाया फूल।
कामारि जय पद मिले, मिटे असाता शूल॥ 2॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्...

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः।

(108/27/9 बार लवंग या पुष्प से जाप्य करें।)

जयमाला

दोहा

प्रथम नमूं अरिहन्त को, दूजा पद गुरु सार।
तीजी जिनवाणी नमूं, गाऊं गुण विस्तार॥

राग :- कर्मन की त्रेसठ प्रकृति नाश... पद्धड़ी छंद

जय देव नमूं अरिहन्त सदा,
जिससे होते हैं कर्म विदा।
जो छियालीस गुण के धारी है,
जो शिव पद के अधिकारी है॥ 1॥

प्रभु चार चतुष्टय धारी हो,
तुम समवशरण अधिकारी हो।
प्रभु दिव्य ध्वनि के दाता हो,
तुम ही भवि भाग्य विधाता हो॥ 2॥

ॐ कार रूप है तुम वाणी,
जिससे पाते सब सुख प्राणी।
जो स्याद्वाद कहलाती है,
जिन शासन की वो थाती है॥ 3॥

गणधर ने गुंथी है वाणी,
फिर वही भारती सब जानी।
जिनवाणी उसको कहते हैं,
जिससे प्राणी सुख लहते हैं॥ 4॥

मैं गुरु नमूं मन हर्षा के,
जो शिवपद पंक्ति मन लाके।
निर्ग्रन्थ अवस्था धारी है,
और धर्म ध्यान अधिकारी है॥ 5॥

है छत्तीस पच्चीस गुणधारी,
है आठ बीस के अधिकारी।
संसार भोग के ये त्यागी,
है नग्न दिगम्बर बड़भागी ॥ 6 ॥

गुरुवर इस युग में सुखदाता,
ये ही हैं सब जन के त्राता।
इनकी महिमा जो भी गावें,
वह शाश्वत पद भी निज पावें ॥ 7 ॥

हैं तीन रतन ये सुखकारी,
अरू तीन रतन के दातारी।
इनकी पूजा से शिव मिलता,
फिर निज वैभव सौरभ खिलता ॥ 8 ॥

बस यही प्रार्थना है मेरी,
मिट जावे भव भव की फेरी।
''योगीन्द्र'' नमे मन वचन काय,
संसार मिटे निज आत्म पाय ॥ 9 ॥

दोहा

तीन योग से मैं नमूं, देव शास्त्र गुरु तीन।
''योगी'' की यह भावना, होऊं निज आधीन ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जल-फलादि जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

देव शास्त्र गुरुदेव को, जो पूजें मन लाय।
''योगी'' वह शिवपद लहें, निज वैभव को पाय ॥

इत्याशीर्वाद...

श्री सिद्ध परमेष्ठी पूजा

स्थापना (दोहा)

अष्ट कर्म को नष्ट कर, अष्ट महा गुण पाय,
अष्टम वसुधा में बसें, सिद्ध प्रभु सुखदाय।
आह्वानन हम कर रहे, तिष्ठो तिष्ठो नाथ,
हृदयकमल से तुम बसो, दोनों जोड़ूं हाथ।

ॐ ह्रां श्री णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन। अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रां श्री णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रां श्री णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(राग- जोगी रासा, इह विधि राज करे नर नायक...)

गंगा जल को प्रासुक जल ले, सिद्ध प्रभु गुण गाओ,
जन्म जरा मृत्यु नाश करन को सब मिल शीश नवाओ।
अष्टम वसुधा पाने को मैं सिद्ध प्रभु गुण गाऊं,
आतमशुद्धि होवे मेरी सिद्ध परम पद पाऊं ॥

ॐ ह्रां श्री सिद्धेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि का चंदन लाकर केशर संग घिसाया,
भव भव का संताप नशे प्रभु चरणन चर्च चढ़ाया।
अष्टम वसुधा पाने को मैं सिद्ध प्रभु गुण गाऊं,
आतमशुद्धि होवे मेरी सिद्ध परम पद पाऊं ॥

ॐ ह्रां श्री सिद्धेभ्यो भवाताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अक्षत प्रासुक धोकर प्यारे पुंज बनाये,
अक्षय पद को पाऊँ दाता अक्षय बिन दुख पाये।

अष्टम वसुधा पाने को मैं सिद्ध प्रभु गुण गाऊं,
आतमशुद्धि होवे मेरी सिद्ध परम पद पाऊं ॥

ॐ ह्रां श्री सिद्धेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली सब कर भेली पुष्पांजलि कर वाया,
कामबाण के नाशन हेतु सिद्धन चरण चढ़ाया।
अष्टम वसुधा पाने को मैं सिद्ध प्रभु गुण गाऊं,
आतमशुद्धि होवे मेरी सिद्ध परम पद पाऊं ॥

ॐ ह्रां श्री सिद्धेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

पुड़ी पूआ लड्डू मोदक मीठे सरस बनाये,
भूख डाकिनी नाशन हेतु भर-भर थाल चढ़ाये।
अष्टम वसुधा पाने को मैं सिद्ध प्रभु गुण गाऊं,
आतमशुद्धि होवे मेरी सिद्ध परम पद पाऊं ॥

ॐ ह्रां श्री सिद्धेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक की ज्योति जलाकर मोहमहातम भागे,
निज आतम में वास करूं प्रभु निज आतम लौ लागे।
अष्टम वसुधा पाने को मैं सिद्ध प्रभु गुण गाऊं,
आतमशुद्धि होवे मेरी सिद्ध परम पद पाऊं ॥

ॐ ह्रां श्री सिद्धेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ने खूब सताया दुख सहे अतिभारी,
धूप दशांगी खेऊं अग्नि में मेटो जग की ख्वारी।
अष्टम वसुधा पाने को मैं सिद्ध प्रभु गुण गाऊं,
आतमशुद्धि होवे मेरी सिद्ध परम पद पाऊं ॥

ॐ ह्रां श्री सिद्धेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

आम मोसम्मी दाडिम केला पिस्ता पुंगी लाये,
मोक्ष महाफल पाऊं मैं प्रभु चरणन आज चढ़ाये।
अष्टम वसुधा पाने को मैं सिद्ध प्रभु गुण गाऊं,
आतमशुद्धि होवे मेरी सिद्ध परम पद पाऊं ॥

ॐ ह्रां श्री सिद्धेभ्यो महामोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

आठ द्रव्य का अर्घ बनाया अष्टम वसुधा पाने,
अष्ट कर्म को नष्ट करूं मैं अष्ट महागुण पाने।
अष्टम वसुधा पाने को मैं सिद्ध प्रभु गुण गाऊं,
आतम शुद्धि होवे मेरी सिद्ध परम पद पाऊं ॥

ॐ ह्रां श्री सिद्धेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सिन्धु नदी का नीर ले, झारि में भरवाय।
शान्ति धारा मैं करूं, विघ्न शान्त हो जाय॥

शान्तये शान्तिधारा...

भांति भांति के फूल ले, पुष्पाञ्जलि के हेत।
पुष्पाञ्जलि अर्पित करूं, आठों अंग समेत ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि...

जाप्य

ॐ ह्रां श्री सिद्धेभ्यो नमः।

(108-27 या 9 बार लवंग या पुष्प से जाप्य करें।)

गुणमालिका

(राग-सोरठा-क्षीरोदधि उनहार...)

चिन्मूरत भगवान, चिदानन्द चित्त रूप हो।
भाषा करूं बखान, सिद्ध प्रभु गुणमालिका ॥

जयमाला

इह विधि ठाड़ो होय कर....

अविनाशी अविकार हो, परम सिद्ध भगवान।
सिद्ध शिला में तुम बसो, तुम्हें नमूं धर ध्यान ॥ 1 ॥

जगत शिरोमणि आप हो, सदा रहो जयवन्त।
मैं तुमसा ही प्रभु बनूं, करूं दु:खों का अन्त ॥ 2 ॥

नित्य निरंजन आप हो, कर्म कलंक है नाँहि।
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध हो, निज आतम के माँहि ॥ 3 ॥

समयसार के सार हो, समयसार हो नाथ।
अजर अमर अकलंक हो, मुक्ति रमा के साथ ॥ 4 ॥

नित्य निरंजन ज्ञान मय, नित्य आत्मा वास।
नित नित में ही नित रहे, करके भव का नाश ॥ 5 ॥

शिवशंकर तुम ही महा, मुक्ति वधु के ईश।
आप विराजे हो प्रभु, तीन लोक के शीश ॥ 6 ॥

त्रिभुवन के तुम गुण मणि, अष्ट गुणों से युक्त।
मुनिजन तेरा ध्यान धर, पावें मोक्ष संयुक्त ॥ 7 ॥

चिदानन्द आनन्दघन, मुनि मन कमल विकास।
परमपिता रक्षा करो, देवो मुक्ति वास ॥ 8 ॥

भक्ति से जो गावते, सिद्ध प्रभु गुणनाम।
रिद्धि सिद्धि सब प्राप्त हो, पूर्ण होय सब काम ॥ 9 ॥

इन्द्र नरेन्द्र सभी नमें, और नमें धरणेन्द्र।
गणपति भूपति सब नमें, नमें यति 'योगीन्द्र' ॥ 10 ॥

सोरठा

जिसको करूं बखान, इच्छा मेरी है प्रभु ।
पाऊँ तुमसा थान, भव भव में अब ना फसूं ॥

ॐ ह्रां श्री सिद्धेभ्योजल-फलादि जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

निकल प्रभु परमात्मा, सिद्ध प्रभु भगवान।
निज स्वरूप में मैं रहूँ, पाऊँ मोक्ष महान॥

इत्याशीर्वाद...

कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा

स्थापना

(गीता छन्द - प्रभु पतित पावन...)

काशी बनारस देश नगरी मध्य लोक विराजती,
शुभ आर्य खण्ड और द्वीप जम्बू में मनोहर लागती।
श्री मात वामा अवतरे पितु अश्वसेन कहावते,
आह्वान सब मिल कर रहे तुमको हृदय में थापते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

अष्टक

चौबीसी पूजा *(चौबीसों श्री जिनचन्द...)*

प्रासुक जल झारी नाथ, भरकर मैं लाया,
मम जन्म जरा मृत नाश, पूजन को मैं आया।
कलिकुण्ड के पारसनाथ, तुम पद बलिहारी,
नश जावे दुःख दारिद्र, अरु विपदा सारी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने धरणेन्द्र पद्मावति यक्ष-यक्षिणी सहिताय मम् सर्व राज भय, सर्व भय, सर्व शाकिन्यादि भय निवार्णार्थम् व जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा॥ 1॥

कंचन सा पीला स्वच्छ, चन्दन घिसवाया,
पादाब्ज चढ़ाऊँ गन्ध, भव तम नशवाया।
कलिकुण्ड के पारसनाथ, तुम पद बलिहारी,
नश जावे दुःख दारिद्र, अरु विपदा सारी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी

प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने धरणेन्द्र पद्मावति यक्ष-यक्षिणी सहिताय मम् सर्व राज भय, सर्व भय, सर्व शाकिन्यादि भय निवार्णार्थम् व भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ 2 ॥

चावल को करके साफ, पुञ्ज बनवाया है,
अक्षय पद दाता आप, चरण चढ़ाया है।
कलिकुण्ड के पारसनाथ, तुम पद बलिहारी,
नश जावे दु:ख दारिद्र, अरु विपदा सारी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने धरणेन्द्र पद्मावति यक्ष-यक्षिणी सहिताय मम् सर्व राज भय, सर्व भय, सर्व शाकिन्यादि भय निवार्णार्थम् व अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ 3 ॥

जुही कमल केतकी फूल, चरणन्अग्र धरूं,
नश जावें काम त्रिशूल, मुक्ति नारि वरूं।
कलिकुण्ड के पारसनाथ, तुम पद बलिहारी,
नश जावे दु:ख दारिद्र, अरु विपदा सारी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने धरणेन्द्र पद्मावति यक्ष-यक्षिणी सहिताय मम् सर्व राज भय, सर्व भय, सर्व शाकिन्यादि भय निवार्णार्थम् व कामवाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ 4 ॥

घेवर फेनी पकवान, चरणन पास धरो,
यह भूख बड़ी बलवान, इसका नाश करो।
कलिकुण्ड के पारसनाथ, तुम पद बलिहारी,
नश जावे दु:ख दारिद्र, अरु विपदा सारी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने धरणेन्द्र पद्मावति यक्ष-यक्षिणी सहिताय मम् सर्व राज भय, सर्व भय, सर्व शाकिन्यादि भय निवार्णार्थम् व क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ 5 ॥

दीपक की ज्योति अपार, शुभ गोघृत वाली,
ये मिटे मोह अंधियार, अरु करमन जाली।
कलिकुण्ड के पारसनाथ, तुम पद बलिहारी,
नश जावे दु:ख दारिद्र, अरु विपदा सारी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने धरणेन्द्र पद्मावति यक्ष-यक्षिणी सहिताय मम् सर्व राज भय, सर्व भय, सर्व शाकिन्यादि भय निवार्णार्थम् व मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा॥ 6॥

ले धूप दशांग बनाय, हे प्रभु खेवत हूँ,
आतम गुण गौरव तुम, पद को सेवत हूँ।
कलिकुण्ड के पारसनाथ, तुम पद बलिहारी,
नश जावे दु:ख दारिद्र, अरु विपदा सारी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने धरणेन्द्र पद्मावति यक्ष-यक्षिणी सहिताय मम् सर्व राज भय, सर्व भय, सर्व शाकिन्यादि भय निवार्णार्थम् व अष्ट कर्म दहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा॥ 7॥

ऐला केला शुभ आम, श्रीफल सरस धरें,
मैं पाऊँ मुक्ति धाम, जामन् मरण टरें।
कलिकुण्ड के पारसनाथ, तुम पद बलिहारी,
नश जावे दु:ख दारिद्र, अरु विपदा सारी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने धरणेन्द्र पद्मावति यक्ष-यक्षिणी सहिताय मम् सर्व राज भय, सर्व भय, सर्व शाकिन्यादि भय निवार्णार्थम् व मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा॥ 8॥

ले आठों द्रव्य मिलाय, अर्घ बनाया है,
मैं अर्घ चढ़ाऊँ आज, तुम पद भाया है।

कलिकुण्ड के पारसनाथ, तुम पद बलिहारी,
नश जावे दु:ख दारिद्र, अरु विपदा सारी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने धरणेन्द्र पद्मावति यक्ष-यक्षिणी सहिताय मम् सर्व राज भय, सर्व भय, सर्व शाकिन्यादि भय निवार्णार्थम् व अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥ 9॥

दोहा

प्रासुक मीठा नीर ले, धारा तीन कराय।
शांति सब जग को मिले, जिन पद धार धराय॥ 1॥

शान्तये शान्ति धारा...

बकुल मालती केवड़ा, पुष्पाञ्जलि कराय।
मिले निजातम शुद्धता, जिन पद लेय धराय॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत...

जाप्य

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हम् श्री कलिकुण्ड स्वामिने नम:।

(108/27/9 बार लवंग या पुष्प से जाप्य करें।)

गुणमालिका

दोहा

कलिकुण्ड पारसनाथ की, महिमा अपरम्पार।
तीन योग से नित नमूं, शीघ्र करूं भव पार॥

आल्हा छन्द

वामा नन्दन पार्श्व प्रभु की, महिमा सब मिल गाते हैं,
चरणों का नित वन्दन करके, तुमको शीश झुकाते हैं।
तुमने जन्म बनारस नगरी लेकर धन्य किया परिवार,
वामा माता हुई बड़भागन अश्वसेन राजा दरबार॥ 1॥

गर्भ में आने से पूर्व ही रत्न वृष्टि होती सुखकार,
सारे जन मन आनन्द पाते और मनाते जय जयकार।
पौष बदी ग्यारस के दिन जन्म लिया तुमने भगवान,
लेकर गया इन्द्र मेरु पर न्हवन किया था मंगल थान॥ 2॥

नाग नागिनी कारण पाकर तुम्हें हुआ वैराग्य महान,
स्वर्ग लोक लोकान्तिक आकर उत्साह बढ़ाया तुम ढींग आन।
करी तपस्या घोर आपने नहीं रहा कुछ तन का ध्यान,
पूर्व जनम का बैरी आकर खूब किया उपसर्ग महान॥ 3॥

घनघोर भयानक उपसर्गों से चारों दिशा रही तम छाय,
पत्थर मिट्टी गोला पानी भांति भांति उपसर्ग कराय।
फिर भी सारे उपसर्गों से नहीं डिगे तुम हे जिनराय,
तब ही धरणेन्द्र पद्मावती आये चरणकमल शिरनाय॥ 4॥

कमठ जीव नतमस्तक होकर भाग गया वो निज स्थान,
चार घातिया नाश किया तुम पाया तुमने केवलज्ञान।
स्याद्वाद और अनेकान्त की दिव्य देशना दी सुखकार,
सम्यक् मार्ग बताया तुमने जिससे होते भविजन पार॥ 5॥

भारत भूमि पर हे जिनवर पुण्य आत्माओं के अनुसार,
विचरण करके भवि जीवों का बिन स्वार्थ से किया उद्धार।
चार अघाति नाश करन को पहुंचे सम्मेदाचल जान,
योग निरोध किया तुम जिनवर पाया तुमने मुक्ति थान॥ 6॥

मैं भी चरणों का चेला हूँ भव भव घूमा बहुत अपार,
कहीं नहीं साता मैं पाई खूब ही खाई कर्म की मार।
देव गति में सुख नहीं किंचित नरक गति में काट और मार,
पशु गति के दु:ख क्या कहना छेदन भेदन और अतिभार॥ 7॥

चारों गतियों में मैं घूमा योनि लाख चौरासी माय,
संगी साथी कोई नहीं किसका चाहे भ्रात पिता हो माय।
मात-पिता अब तुम ही मेरे दूर करो दु:ख मैं अकुलाय,
तुमसा दानी कोई ना देखा दूर करे दु:ख जो दु:खदाय॥ 8॥

सम्यक् दर्शन कभी ना छूटे सम्यक्ज्ञान निधी मैं पाय,
सम्यक्चारित्र भव भव धारू रत्नत्रय निधी अधिकाय।
योग निरोध करूं मैं भी प्रभु तुमसा बन ''योगीन्द्र'' महान,
कर्म कालिमा को मैं नाशूं पाऊं मोक्षपुरी का थान॥ 9॥

दोहा

पारस से पारस लहूं, करूं आत्मा सिद्ध।
तुमसा पारस मैं बनूं, ''योगी'' बन कर शुद्ध॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने धरणेन्द्र पद्मावति यक्ष-यक्षिणी सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्व भय, सर्व शाकिन्यादि भय निवार्णार्थम् जल-फलादि जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

बन्दू पार्श्व जिनेश को, चरण कमल चित लाय।
भव भव के पातक मिटे, मोक्ष पुरी पहुँचाय॥

इत्याशीर्वाद ...

श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर अर्चना

स्थापना

चाल : सामान्य

ऋषभनाथ को आदि मनाकर महावीर के गुण गाऊँ,
चौबीस जिनेश्वर चरण कमल में नित प्रति धोक लगाऊँ।
हृदय विराजो हे परमेश्वर हृदय कमल पर पधाराऊँ,
आह्वानन स्थापन करके अतिशय पुण्य कमाऊँ ॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि वर्द्धमानान्तास्तीर्थंकर परमदेवा: अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं ऋषभादि वर्द्धमानान्तास्तीर्थंकर परमदेवा: अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीं ऋषभादि वर्द्धमानान्तास्तीर्थंकर परमदेवा: अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् संनिधिकरणं।

राग :- चौबीसो श्री जिनचंद...

चिरकाल से हूँ मैं त्रस्त सरिता ज्ञान बहें,
हो ज्ञान सूर्य ना अस्त धारा तीन करें।
चौबीसों श्री जिनचंद आनन्द सुख दाता,
मिट जावे भव का फंद पाऊ सुख साता ॥

ॐ ह्रीं ऋषभाजित संभवाभिनन्दन सुमतिपद्मप्रभु सुपार्श्वचन्द्रप्रभु पुष्पदन्त शीतल श्रेयांसवासुपूज्य विमलानंत धर्म शान्ति कुंथु अरमल्लि मुनिसुव्रत नमिनेमिपार्श्ववर्द्धमानेभ्य तीर्थकर परमदेवेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु इस संसार में नाथ आतम त्रस्त हुआ,
मैं गंध चढ़ाऊं नाथ भक्ति व्यस्त हुआ।
चौबीसो श्री जिनचंद आनन्द सुख दाता,
मिट जावे भव का फंद पाऊं सुख साता ॥

ॐ ह्रीं ऋषमाजितसंभवाभिनन्दन सुमतिपद्म प्रभु सुपार्श्वचन्द्रप्रभु पुष्पदन्त

शीतल श्रेयांसवासुपूज्य विमलानन्त धर्मशान्तिकुंथु अरमल्लिमुनिसुव्रत नमिनेमि पार्श्व वर्द्धमानेभ्य: तीर्थकर परमदेवेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मम अक्षय निधि भण्डार मुझको मिल जावे,
इस हेतु तंदुल सार चरणन चढ़ावावें।
चौबीसो श्री जिनचंद आनन्द सुख दाता,
मिट जावे भव का फन्द पाऊ सुख साता॥

ॐ ह्री ऋषभाजित संभवानिन्दन सुमतिपद्मप्रभुसुपार्श्व चन्द्रप्रभु पुष्पदन्त शीतल श्रेयांस वासुपूज्य विमलानन्त धर्मशान्ति कुन्थु अरमल्लिमुनिसुव्रत नमिनेमिपार्श्व वर्द्धमानेभ्य: तीर्थंकर परमदेवेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम को सौरम सार, मुझमें भर दीजिये,
मैं सुमन सुलाया द्वार रतिपति जय पद दीजे।
चौबीसों श्री जिनचंद आनन्द सुख दाता,
मिट जावे भव का फन्द पाऊ सुख साता॥

ॐ ह्रीं ऋषभाजितसंभवभिनन्दन सुमतिपद्मप्रभु सुपार्श्वचन्द्रप्रभु पुष्पदन्त शीतल श्रेयांस वासुपूज्य विमलानन्त धर्म शान्ति कुन्थु अरमिल्लमुनिसुव्रत नमिनेमिपार्श्व वर्द्धमानेभ्य: तीर्थंकर परमदेवेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु खूब मैं खाया नाज तो भी न तृप्त हुआ,
आतम सुख का पीयूष तब भक्ति प्राप्त किया।
चौबीसों श्री जिनचंद आनन्द सुख दाता,
मिट जावे भव का फन्द पाऊ सुख साता॥

ॐ ह्रीं ऋषभाजित संभवाभिनंदन सुमतिपद्प्रभु सुपार्श्वचंद्रप्रभु पुष्पदन्त शीतल श्रेयांस वासुपूज्य विमलानन्त धर्म शान्ति कुन्थु अरमल्लि मुनिसुव्रत नमिनेमिपार्श्व वर्द्धमानेभ्य: तीर्थंकर परम देवेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मम ज्ञान ज्योति हे नाथ घर में जल जावे,
ये दीप चढ़ाता साथ कल्मष टल जावे।

चौबीसों श्री जिनचंद आनन्द सुख दाता,
मिट जावे भव का फन्द पाऊ सुख साता॥

ॐ ह्रीं ऋषभाजित संभवाभिनंदन सुमति पद्मप्रभु सुपार्श्व चन्द्र प्रभु पुष्पदंत शीतलं श्रेयांस वासुपूज्य विमलानन्त धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि मुनिसुव्रत नमिनेमिपार्श्व वर्द्धमानेभ्य: तीर्थंकर परमदेवेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण की सारी गंध फैले चारो दिश,
मैं धूप चढ़ाऊ सुगन्ध भक्ति अहर्निश।
चौबीसो श्री जिनचंद आनन्द सुख दाता,
मिट जावे भव का फन्द पाऊ सुख साता॥

ॐ ह्रीं ऋषभाजितसंभवाभिनन्दन सुमति पद्म प्रभु सुपार्श्वचन्द्रप्रभु पुष्पदंत शीतलश्रेयांस वासुपूज्य विमलानन्त धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि मुनिसुव्रत नमिनेमि पार्श्व वर्द्धमानेभ्य: तीर्थंकर परमदेवेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम सम्पती हेतु फल मैं चढ़ाता हूँ,
पाऊ मैं मुक्ति सेतु तुम गुण गाता हूँ।
चौबीसो श्री जिनचंद आनन्द सुख दाता,
मिट जावे भव का फन्द पाऊं सुख साता॥

ॐ ह्रीं ऋषभाजित संभवाभिनन्दन सुमतिपद्म प्रभु सुपार्श्व चन्द्रप्रभु पुष्पदन्त शीतल श्रेयांस वासुपूज्य विमलानन्त धर्मशान्ति कुन्थु अरमल्लि मुनिसुव्रत नमिनेमि पार्श्व वर्द्धमानेभ्य: तीर्थंकर परमदेवेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनमोल द्रव्य का अर्घ्य नाथ बनाया है,
मैं पाऊ पद भी अनर्घ अर्घ चढ़ाया हूँ।
चौबीसो श्री जिनचन्द आनन्द सुख दाता,
मिट जावे भव का फन्द पाऊं सुख साता॥

ॐ ह्रीं ऋषभाजित संभवाभिनन्दन सुमति पद्मप्रभु सुपार्श्व चन्द्रप्रभु पुष्पदन्त शीतल श्रेयांस वासुपूज्य विमलानन्त धर्म शान्ति कुन्थु अरमल्लि मुनिसुव्रत नमिनेमि पार्श्व वर्द्धमानेभ्य: तीर्थंकर परमदेवेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

चौबीसों के चरण में बार बार सिर नाय।
शान्ति धारा मैं करू सर्व शान्ति हो जाय॥

शान्तये शान्ति धारा

सुरभित गंध सुफूल ले जिनवर चरण चढ़ाय।
सुख शान्ति शान्ति मिले आतम गुण विकसाय॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि....

जाप्य

ॐ ह्रीं श्रीं श्री ऋषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

(108/27/9 बार लवंग या पुष्प से जाप्य करें।)

जयमाला

दोहा

चौबीसों जिनवर नमो, नमो जोड़कर हाथ।
ऐसा वर मम दीजिये, कभी न छूटे साथ॥

राग— सुनिये जिन अरज हमारी..

सुनिये अरज हमारी, हम शरण लही है तिहारी।
चौबीसों जिनवर ध्यायुं, मन वच तन शीश नवाऊँ॥ 1॥

संसार असार अपारा, तुम भक्ति ही है सहारा।
स्वर्गादिक सुख मैं पाया, पर तुम बिन दुःख उठाया॥ 2॥

भोगे हैं भोग जो हमने, जाने हैं जिनवर तुमने।
छः महिना पहले माला, मुरझायी बनी थी आला॥ 3॥

फिर आरतध्यान उपायो, एक इन्द्रिय तन को पायो।
एक इन्द्रिय में दुःख भारी, दो इन्द्रिय में भी ख्वारी॥ 4॥

तीन इन्द्रिय चार और पांचा, सुख पाया मैं नहीं सांचा।
नरकादि दु:ख उठाये, वाणी से कहे नहीं जाये॥ 5॥

आपस में खूब लड़ायो, बहु मार जु काट मचाओ।
इत्यादि दु:ख अनन्ता, हम भोगे श्री भगवन्ता॥ 6॥

पशु योनि को तन धारो, काहु ने कबहु सम्हारो।
मैं बोझा खूब उठाया, भूख-प्यास ने खूब सताया॥ 7॥

मैं भार सही बहु भारी, वाणी भी न बोली न्यारी।
अब किन-किन दु:ख गिनाऊँ, मैं विपदा कौन सुनाऊँ॥ 8॥

मैं गर्भ विषय प्रभु आयो, औंधे मुँह सिर लटकायो।
माता को झूठो खाय़ो, मैंने बहु दु:ख उठायो॥ 9॥

प्रभु जन्म हुआ जब मेरा, परिवारीजन ने घेरा।
मैं रोया वो हरषाये, खुशियन के बाजे बजाये॥10॥

क्रम-क्रम से यौवन आयो, संसार ने मोय फँसायो।
मैं सुध-बुध सब विसरायी, त्रिया की बात बनायी॥11॥

कहु धरम-करम नहीं कीनो, विषयन मैं ही मन दीनो।
जब वृद्ध अवस्था आयी, सुत तात सुने न मायी॥12॥

अब किन ढिग प्रभु मैं जाऊँ, अपनो दु:ख कौन सुनाऊँ।
अब शरण तुम्हारी आया, दु:ख दूर करो जिनराया॥ 13॥

चरणन की भक्ति दीजे, मिथ्यामति मम हर लीजे।
आशीष जो मैं एक चाहु, चरणन में अर्जी सुनाऊँ॥14॥

जब तक मैं मुक्ति न पाऊँ, चरणन की सेवा पाऊँ।
तुम सब समरथ जिन स्वामी, तुम ही जिनवर गुण नामी॥15॥

तुमसा कोई और न देखा, जो दूर करे दु:ख रेखा।
जब चरणन कृपा होगी, शिव पावेगा ''मुनि योगी'' ॥16॥

धत्ता

चौबीस जिनेशा, हरो कलेशा, हे परमेशा, दु:खहर्ता
''योगी'' गुण गावें, हर्ष बढ़ावें, आनन्द पावें, सुखकर्ता॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि वर्द्धमानपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

विघन हरो मंगल करो, चौबीसों जिनराज।
मेटो भव का फन्द तुम, पाऊँ मोक्ष समाज॥

इत्याशीर्वाद ...

श्री पंच परमेष्ठी अर्चना

अर्हत्परमेष्ठी अर्चना

नरेन्द्र छन्द

देव मैं अरिहन्त महन्ता पाप करम रिपु हन्ता,
चार चतुष्टय धारी जिनवर सकल प्रभु शिव कन्ता।
तुमको पूजें शिवसुख होता ऐसा गणधर गाया,
इसीलिए मैं आह्वानन कर के मन में अति हर्षाया॥

ॐ ह्रीं अरि प्रमथनाद्रजोरहस्य निरसनाच्चसमुद्भिन्नानन्त ज्ञानादि चतुष्टयतया शक्रादिकृतामनन्त संभाविनी महतां मंगलत्वेन लोकोत्तम शरण भूतानाम् परम भट्टारक श्री अर्हत्परमेष्ठिनामष्टतयी मिष्टिं करोमिति स्वाहा। पुष्पाञ्जलि

नन्दीश्वर पूजा

कंचन का थाल मँगाय, अर्घ बनाय लिया,
चरणन में छोड़ूँ आय, हर्षित होय हिया।
देवाधिदेव अरिहन्त, तुमको नमन करूँ,
मैं पाऊँ सौख्य अनन्त, भव का वमन करूँ॥

ॐ ह्रीं घाति चतुष्टय रहितेभ्यो नव केवल लब्धि समन्वितभ्यो परम भट्टारक अर्हत्परमेष्ठिभ्यो जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

तीन लोक में शान्ति हो, हे अरिहन्त जिनेश।
शान्ति धारा मैं करूँ, पाऊँ शान्ति हमेश॥ 1॥

शान्तये शान्ति धारा...

बकुल केवड़ा पुष्प ले, गेंदा बेला लाय।
पुष्पाञ्जलि अर्पित करूँ, सभी दोष टर जाय॥ 2॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत..।

सिद्ध परमेष्ठी अर्चना

नरेन्द्र छन्द

सिद्ध शिला के वासी भगवन, नाथ निरंजन प्यारे,
आतम में आतम के द्वारा आतम में सुख धारे।
आठ करम मेरा नश जावे जो संसार बनाया,
आह्वानन स्थापन करता चित में अति हर्षाया॥

ॐ ह्रीं सामग्री विशेष विश्लेषिता शेष कर्म मल कलङ्कपङ्कतया सांसिद्धिकात्यन्तिक विशुद्धि विशेष विभवादभिव्यक्त परमोत्कृष्ट सम्यक्त्वादि गुणाष्टक विशिष्ट मुदितोदित स्वपर प्रकाशात्मक चिच्चमत्कारमात्र परतन्त्र परमानन्दैक कमयीं निर्गतानन्त पर्यायतयैकं किञ्चिदनवरता स्वाद्यमान लोकोत्तर परम मधुर स्वरस स्वभर निभर कौटस्थ्यमधिष्ठितां परमात्मता मा संसार मनासादित पूर्वामपुनरावृत्याधिष्ठितानां लोकोत्तर शरण भूतानां परम भट्टारक सिद्ध परमेष्ठिनामष्टतयी मिष्टिं करोमीति स्वाहा। पुष्पाञ्जलि।

जोगी रासा

आठ द्रव्य का अर्घ बनाया अष्टम वसुधा पाने,
अष्ट कर्म को नष्ट करूँ मैं अष्ट महागुण पाने।
अष्टम वसुधा पाने को मैं सिद्ध प्रभु गुण गाऊँ,
आतम शुद्धि होवे मेरी सिद्ध परम पद पाऊँ॥

ॐ ह्रीं कर्माष्टक विमुक्तेभ्य: परम भट्टारक सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सिन्धु नदी का नीर ले, झारि में भरवाय।
शान्ति धारा मैं करूँ, विघ्न शान्त हो जाय॥

शान्तये शान्ति धारा...

भाँति-भाँति के फूल ले, पुष्पाञ्जलि के हेत।
पुष्पाञ्जलि अर्पित करूँ, आठों अंग समेत॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्...

आचार्य परमेष्ठी अर्चना

नरेन्द्र छन्द

पंचाचार परायण गुरुवर, चार संघ के धारी,
गणनायक हो गणपति गुरुवर मोक्षमार्ग अधिकारी।
मोक्षमार्ग मुझको दिखलावो संसारी जन ने घेरा,
हृदयकमल पर आप बिराजो मिट जावे भव फेरा॥

ॐ ह्रीं व्यवहार रत्नत्रयावधान समुद्भिद्यमान निश्चय रत्नत्रयै कलाभमनुभवंतं आनन्द सान्द्रं शुद्धस्वात्मर्भिनि विशमानानां विश्वस्वरूपोपलब्धि प्रेयसी दृढ़तर परिरम्भ सुखाभिलाषुक मुमुक्षुवगाग्रहैक सर्गायमानान्त: करणानां मंगल लोकोत्तम शरणभूतार्थानाम् भट्टारक आचार्य परमेष्ठितयीमिष्टिं करोमीति स्वाहा। पुष्पाञ्जलि।

भुजंग प्रयात्

आठों ही द्रव्यों को भेला किया है,
मुझे आठ कर्मों ने मेला किया है।
छत्तीस गुणधारी आचार्य प्यारे,
नमूं मैं नमूं मैं हरो दु:ख सारे॥

ॐ ह्रीं पञ्चेन्द्रिय विषम विरतेभ्य: भट्टारक आचार्य परमेष्ठिभ्यो जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

चरणकमल प्रक्षालने, को मैं हूँ तैयार।
नीर निधी का नीर ले, करूँ तीन मैं धार॥

शान्तये शान्ति धारा...

कामदेव मर्दन किया, तुमने हे गुरुदेव !
कुसुमांजलि मैं कर रहा, मेटो टेव कुटेव॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्....

उपाध्याय परमेष्ठी अर्चना

नरेन्द्र छन्द

ग्यारह अंग और चौदह पूरब के धारी तुम देवा,
पढे पढ़ावे शिक्षा देवें करें भारती सेवा।
ज्ञान बिना सब जग अंधियारा मुझको ज्ञान दिलाओ,
भक्ति भाव से थापन करता मम अज्ञान नशाओ॥

ॐ ह्रीं निरन्तर घोर दु:खावर्त विवर्तन चतुर्गति परिवर्तनार्णवतूर्णनिस्तीर्ण मनोरथ महारथमनस्कार विनेयाचार प्रवचनानुसासन व्यसनानाम पियोग सुधारसायनाभ्यास सन्निकृष्यमाणा जरामरत्व पयोमहिम्ना मंगललोकोत्तम शरण भूतानाम् उपाध्याय परमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमीति स्वाहा। पुष्पाञ्जलि।

चौबीसी पूजा

है आठ करम के ठाठ, जग में भरमाते,
अब उजड़ें इनकी हाठ, अर्घ हम चढ़वाते।
ये शिवपथ जाननहार, पाठक गुरु ज्ञानी,
इन वन्दन से मिल जाय, मुक्तिसी रानी॥

ॐ ह्रीं व्रत समिति गुप्ति युक्तेभ्य: कषायादि रिपुजेतृभ्य: पञ्चविंशति मूलगुण धारकेभ्य: उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जल-फलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

उदधि नीर को छानकर, प्रासुक भृंग भराय।
आत्म शान्ति मुझको मिले, धारा तीन कराय॥

शान्तये शान्ति धारा...

कामारि जय पद मिले, तुम्हें चढ़ाऊँ फूल।
भ्रमण मिटे मेरा गुरु, पाऊँ पद अनुकूल॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्...

साधु परमेष्ठि अर्चना

नरेन्द्र छन्द

ज्ञान ध्यान और तप के धारी वेष दिगम्बर धारी,
षट् आवश्यक नित प्रति करते धर्म ध्यान अधिकारी।
ऐसे नग्न दिगम्बर साधु को मैं शीश नवाऊँ,
पांच प्रकारी गुरुवर को मैं थापन कर पधराऊँ॥

ॐ ह्रीं वैश्रमिक परम चिन्मय विश्वैश्वर्यपदापहार कठोर कर्मठ दु:कर्मशात्रव शक्ति शातनोत्सिक्त विशिष्ट शक्ति व्यञ्जक प्रकाम दुर्लक्ष व्यतिरेक क्षेत्र ज्ञाक्षान्तर प्रवेश दुर्ललित बुद्धयनुबन्ध प्रवर्धमान सद्धयान समिद्ध सहजानन्दामृत रसास्वाद नाव धीरित परम भुक्ति सम्पत्प्रियास मागमोक्त कण्ठानां मंगल लोकोत्तम शरणभूतानां सर्व साधु परमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमीति स्वाहा। पुष्पाञ्जलि।

मेरी भावना :- राग सूर्योदय

जल चन्दन अक्षत पुष्प आदि ले अर्घ बनाया प्यारा है,
क्षायिक लब्धि मैं भी पाऊँ कर्म नशे अब सारा है।
तीन रोग अब नाशो मेरा भव भव में भटकाया हूँ,
तुमसा पद गुरु मैं भी धारू साधु शरण में आया हूँ॥

ॐ ह्रीं पञ्चमहाव्रत समिति प्रभृति विभूषितेभ्य: पंचेन्द्रियद मनोद्यत शक्तिभ्य: अष्टाविंशति मूलगुण धारकेभ्य: साधु परमेष्ठिभ्यो जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

साधु चित्त सम नीर ले, प्रासुक शुद्ध कराय।
शान्ति धारा मैं करूँ, साधु पद मिल जाय॥

शान्तये शान्तिधारा...

साधु मन सा सुमन ले, कोमल गंध सुवास।
सुमनांजलि अर्पित करूँ, पाऊँ मुक्ति वास॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्...।

चौबेला

जो पंच इष्ट की पूजा करता निज स्वरूप को पाता है,
परम्परा से कर्म नाश कर मुक्ति भूप कहाता है।
इति भीति और आधि-व्याधि नश सुख संपति को पाता है,
भोगी तज और ''योगी'' बन कर स्वयं योग्य हो जाता है॥

इत्याशीर्वाद ....

अर्हतादि मंगलोत्तम शरण अर्चना

नरेन्द्र छन्द

मंगल दान करें वे नित प्रति श्री अरिहन्त है मंगल रूप।
पाप पंक को दूर हटा कर दे देते हैं वे निज रूप।
आठ द्रव्य का अर्घ बनाकर तुमको आज चढ़ाता हूँ,
तुमसा पद मुझको मिल जावे यही भावना भाता हूँ॥ 1॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलाय जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चिदानन्द चिद्रूप महाप्रभु अविनाशी अविकारी हो,
अष्टकर्म को नष्ट किया है अष्ट महागुणधारी हो।
ऐसे सिद्ध निकल परमातम मंगल रूप कहाते हैं,
उनसा पद हमको मिल जावे यही भावना भाते हैं॥ 2॥

ॐ ह्रीं सिद्ध मंगलाय जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तीस पच्चीस आठ बीस गुण पालन करते साधु हैं,
पद आचारज पाठक साधु निज आतम आस्वादु हैं।
तीनों मंगल रूप कहाते सुखसागर भण्डारी हैं,
ऐसे गुरु के चरणकमल में नित दिन धोक हमारी हैं॥ 3॥

ॐ ह्रीं साधु मंगलाय जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म है पावन प्यारा केवली प्रणीत कहाता है,
ज्ञानामृत का पान कराता निज वैभव दिलवाता है।
सभी सौख्य का दाता है ये मंगल रूप कहाता है,
आठ द्रव्य से हम नित पूजे सुख शांति का दाता है॥ 4॥

ॐ ह्रीं केवलि प्रज्ञप्त धर्म मंगलाय जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर पूजा

लोकोत्तम श्री अरिहन्त, आतम हितकारी,
मम होवे भव का अन्त, जो है दु:खकारी।
मैं तीन योग से नाथ, तुमको शिर नाऊँ,
ना चरणन छूटे साथ, ये आशीष पाऊँ॥ 5॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तमाय जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सिद्ध शिला पर जाय, शीघ्र विराजे हो,
तुम लोकोत्तम भगवान, शाश्वत साजे हो।
मैं तुमसा पद प्रभु पाय, तुमसा हो जाऊँ,
मम आतम होय विशुद्ध, मुक्ति पद पाऊँ॥ 6॥

ॐ ह्रीं सिद्ध लोकोत्तमाय जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आचारज श्री उवज्झाय, साधु लोकोत्तम,
ये ही भव पार लगाय, ये हैं श्रमणोत्तम।
इनके ही आशीर्वाद, हमको मिल जावें,
हम पूजा करके आज, इनके गुण गावें॥ 7॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तमाय जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर के वचन अनूप, तृप्तिकारी है,
है स्याद्वाद अनुरूप, भव दु:खहारी है।
मैं नमूँ नमन कर जोड़, जिनवर धर्म महा,
इनके बिन मुक्ति और, जग में है ही कहाँ॥ 8॥

ॐ ह्रीं केवलि प्रज्ञप्त धर्म लोकोत्तमाय जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंग प्रयात्

ये ही शरण है जगत में जिनेश्वर,
कर्मारि को नाश हुए है परमेश्वर।

इनकी मैं करता हूँ अर्चन और पूजा,
बस ये ही शरण है जगत में न दूजा ॥ 9 ॥

ॐ ह्रीं अर्हत् शरणाय जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निजानन्द निर्द्वन्द शुद्धानुभूति,
परम सिद्ध भगवन्त है जग विभूति।
आठों ही द्रव्यों से पूजा रचाता,
नशे कर्म सारे मैं अर्जी सुनाता ॥ 10 ॥

ॐ ह्रीं सिद्ध शरणाय जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य पाठक और साधु मनाऊँ,
जगत में शरण ये ही दूजा न पाऊँ।
ये ही मोक्षगामी है गुरुवर हमारे,
दिखावें हमें राह हरे दु:ख सारे ॥ 11 ॥

ॐ ह्रीं साधु शरणाय जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर की वाणी से अमृत है झरता,
कोई भव्य जीव इसे पान करता।
वाणी के अमृत को गणधर भी धारें,
यही धर्म जैन हरे कष्ट सारे ॥ 12 ॥

ॐ ह्रीं केवलि प्रज्ञप्त धर्म शरणाय जल-फलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(इस प्रकार पंच परमेष्ठी आदि की अर्चना कर अर्घ्य चढ़ाकर)

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।

चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णतो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलि पण्णतो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि शरणं पव्वजामि, अरहन्त सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहु सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णतो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।

ॐ हां हीं हूं हौं ह: अ सि आ उ सा मम सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

(इस अनादि सिद्ध मन्त्र की 108/27/9 बार लवंग या पुष्प से जाप्य करें।)

पूर्णार्घ्य

नरेन्द्र छन्द

पाँचों परमेष्ठी नित ध्यायूँ और चार नित मंगल,
लोकोत्तम है चार कहाये हरते सभी अमंगल।
चारों की मैं शरण में जाऊँ ये ही पार लगावें,
इन सबकी हम पूजा करके निज वैभव को पावें॥

ॐ ह्रीं पंच परमेष्ठीन् भृत्यनादि सिद्ध मन्त्रेभ्य जल-फलादि पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

विघ्न सभी मम नाश हों, शान्ति धारा धार।
शान्ति करो सब जगत में, यही धर्म का सार॥

शान्तये शान्ति धारा...

जिनवर के उद्यान से, स्याद्वाद के फूल,
चरणन में अर्पित करूँ, मिटे भवों का शूल॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्...

नरेन्द्र छन्द

अष्ट द्रव्य का थाल सजाया अष्टम वसुधा पाने,
सत्रह मन्त्र प्रमाण कहे है सारे कर्म नशाने।
हेम पात्र में पुष्प सजाकर पुष्पाञ्जलि कराऊँ,
शाश्वत पद को मैं प्रभु पाऊँ भव के दु:ख नशाऊँ॥

इत्याशीर्वाद ...

द्वितीय वलय

जयादि अष्ट देवता अर्चना

दोहा

जया देवी तुम आइये, पूजा के स्थान।
तुमको यहाँ बुलावता, बैठो निज स्थान॥

ॐ ह्रीं जये देवि ! अत्रागच्छागच्छ इत्याह्वाननम् स्थापनम् सन्निधिकरणं पुष्पांजलि।

भुजंग प्रयात्

नशे घातिया कर्म अरिहन्त देवा,
करे सेवा आकर के स्वर्गों के देवा।
अरिहन्त चरणों में प्रीति लगावें,
'जया' देवी तुमको हम अर्घ दिलावें॥ 1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे जया देवी इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

दोहा

विजया देवी नाम है, भक्त कही जिन देव।
आह्वानन थापन करूँ, करो सु जिनवर सेव॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हे विजया देव्यै अत्रागच्छागच्छ इत्याह्वाननम् स्थापनं सन्निधिकरणं।

भुजंग प्रयात्

पाया चतुष्टय सु चहु कर्म नाशे,
सु आतम में आतम को आतम प्रकाशे।

ऐसे जिनेन्द्र की सेवा जो करती,
है नाम सु 'विजया' वह जिनधर्म धरती ॥ 2 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे विजया देव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

दोहा

जिनवर का श्रद्धान है, अजिता देवी आप।
यहाँ विराजो आय कर, साफ करो सब पाप ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अजिता देव्यै अत्रागच्छागच्छ इत्याह्वाननम् स्थापनं सन्निधिकरणं। पुष्पांजलि।

भुजंग प्रयात्

सर्वज्ञ ज्ञाता हो दृष्टा सभी के,
परम वीतरागी हो अरिहन्त इन्हीं में।
जिन धर्म श्रद्धानी 'अजिता' मनाके,
मैं देता हूँ अर्घ तुम्हें यहाँ बुलाके ॥ 3 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अजिता देव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं.... इति स्वाहा।

दोहा

अपराजिता है नाम तुम, सकल गुणों की खान।
यहाँ विराजो आय तुम, करो प्रभु गुणगान ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अपराजिता देव्यै अत्रागच्छागच्छ इत्याह्वाननं स्थापनं सन्निधिकरणं। पुष्पांजलि।

भुजंग प्रयात्

नीरादि चन्दन और अक्षत मैं लाया,
और पुष्पादि लाकर के अर्घ बनाया।

हे देवि ''अपराजिता'' नाम प्यारा,
मैं देता हूँ अर्घ हरो विघ्न सारा ॥ 4 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अपराजिता देव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं.... इति स्वाहा।

दोहा

पंचम देवी आप हो, जृम्भा प्यारा नाम।
जिनवर के गुण गावती, तिष्ठो निज तुम धाम॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे जृम्भा देव्यै अत्रागच्छागच्छ इत्याह्वाननम् स्थापनं सन्निधिकरणं। पुष्पांजलि।

कामिनी छन्द

नीर गंध अक्षतादि, आठ द्रव्य लायके,
अर्घ देता भला, हर्ष को बढ़ायके।
पाँचवीं देवी का, नाम 'जृम्भा' कहा,
आइये यज्ञ में, मैं तुम्हें बुला रहा॥ 5॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे जृम्भा देव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं ..... इति स्वाहा।

दोहा

मोहा देवी नाम है, है जिनवर पद मोह।
बड़े प्रेम से थापता, तज कर सब व्यामोह॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मोहा देव्यै अत्रागच्छागच्छ इत्याह्वाननम् स्थापनम् सन्निधिकरणं॥ पुष्पांजलि॥

कामिनी छन्द

वीतराग देव की, भक्त हो तुम महा,
इसलिए मैं तुम्हें, अर्घ को दे रहा।
नाम 'मोहा' कहा, देवी का प्यार से,
कार्य निर्विघ्न हो, इसलिए पुकारते॥ 6॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मोहा देव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं ..... इति स्वाहा।

दोहा

स्तम्भा प्यारी कही, होवें दु:ख स्तम्भ।
तुमको आज बुलावता, नहीं रंच भी दम्भ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे स्तम्भा देव्यै अत्रागच्छागच्छ इत्याह्वाननं स्थापनं सन्निधिकरणं॥ पुष्पांजलि॥

कामिनी छन्द

अम्बु आदि द्रव्य ले, स्वर्ण थाली भरा,
विघ्न सब नाश हो, इसलिए रख रहा।
दु:ख स्तम्भ हो, नाम 'स्तम्भा' कहा,
कोई ना विघ्न हो, थापना कर रहा॥ 7॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे स्तम्भा देव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं..... इति स्वाहा

दोहा

अष्टम देवी तुम कही, नाम स्तम्भनी आप।
आकर आप विराजिये, करने जिनवर जाप॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे स्तम्भनी देव्यै अत्रागच्छागच्छ इत्याह्वाननं स्थापनं सन्निधिकरणं॥ पुष्पांजलि॥

कामिनी छन्द

आठ द्रव्य ले लिए, आठ अंग के सहित।
हित सभी का करो, पूर्ण किरपा सहित।
आठवीं देवी, 'स्तम्भनी' नाम है,
जैन धर्म का इन्हें, पूर्ण श्रद्धान है॥ 8॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे स्तम्भनी देव्यै इदमर्घ्यं पाद्यं..... इति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

नरेन्द्र छन्द

जया आदि से लेकर के मैं आठों देवी मनाऊँ,
आह्वानन स्थापन करके तुमको आज रिझाऊँ।
सम्यक्दृष्टि हो तुम देवी करती हो प्रभु सेवा,
पूरण अर्घ दिलाता तुमको करने जिन वृष सेवा॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं जयादि स्तम्भनी पर्यन्त अष्ट देविभ्यो जल-फलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा

नीर मँगाया मैं महा, भाँति भाँति नदी तीर।
शान्ति धारा मैं करूँ, हरो हमारी पीर॥

शान्तये शान्ति धारा...

शान्ति कल्प विधान पर, पुष्पाञ्जलि कराय।
रोग-शोक दु:ख नाश हो, सुख शान्ति को पाय॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि...

आठों देवी आयकर, करें शान्ति शुभ काम।
हरें अमंगल विश्व का, करें भक्ति निष्काम॥

इति इष्ट प्रार्थना...

तृतीय वलय

विद्यादि सोलह देवता अर्चना

दोहा

षोडश विद्या देविया, तुम्हें थापता आज।
जिनवर की भक्ति करो, और करो सब काज॥
जिनवर का श्रद्धान है, तुमको देवी जान।
आह्वानन थापन करूँ, गाऊँ जिनवर गान॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं रोहिण्यादि षोडश विद्या देवी अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्व - स्थाने तिष्ठ-तिष्ठ अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् स्वाहा॥ पुष्पाञ्जलि॥

गीता छन्द

जिनदेव की तुम सेविका हो 'रोहिणी' तुम नाम है,
विद्याओं में तुम प्रथम देवी धर्म भावन काम है।
तुम आइये इस यज्ञ में आह्वान करता हूँ यहाँ,
लीजिये इस अर्घ को तुम तिष्ठिये थानक जहाँ॥ 1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे रोहिणी देव्यै अत्र आगच्छ-आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ-तिष्ठ इदम् अर्घ्यम् पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं बलिं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

'प्रज्ञप्ती' प्यारा नाम है तुम रूप है मन मोहना,
और अश्व का वाहन तुम्हारा जो लगे अति सोहना।
हे देवी हम इस यज्ञ में तुमको यहाँ बुलवा रहे,
लीजिये यह अर्घ अपना थापना करवा रहे॥ 2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे प्रज्ञप्ती देव्यै अत्र..... गृहाण-गृहाण स्वाहा।

गजवाहिनी देवी तू प्यारी ''वज्रशृंखला'' नाम है,
तुम चार भुज की धारीणी जिननाम आठों याम है।

साधर्मीता से हम यहाँ आह्वान तेरा कर रहे,
ये अर्घ देकर हे देवी सम्मान तेरा कर रहे ॥ 3 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वज्रशृंखला देव्यै अत्र..... गृहाण-गृहाण स्वाहा।

कमलासनी ''वज्राकुंशा'' जिन धर्म की तुम धारीणी,
आचरण तुम्हारा सात्विक है और तुम ब्रह्मचारिणी।
जिन देव की भक्ता तुम्हें हम आज सब बुलवा रहे,
निर्विघ्न सारे कार्य होवें अर्घ ये दिलवा रहे ॥ 4 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वज्राकुंशा देव्यै अत्र..... गृहाण-गृहाण स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

पहला 'जामुन्दा' है प्यारा दूजा 'अप्रतिचक्रा' है,
दोनों ही हैं नाम तुम्हारे मन हो जाता तृप्ता है।
तुमको देवी यहाँ बुलाऊँ शीघ्र यहाँ चली आओ,
कार्य हमारे पूरे कर दो शासन ध्वज फहराओ ॥ 5 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे जामुन्दा देव्यै अत्र..... गृहाण-गृहाण स्वाहा।

नाम तुम्हारा 'पुरुषदत्ता' मन को लगता प्यारा,
रूप तुम्हारा मनमोहक है लगता प्यारा-प्यारा।
हे देवी तुम यहाँ पर आओ कार्य करो अब सारे,
अर्घ चढ़ाता तुमको देवी विघ्न हरो अब सारे ॥ 6 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पुरुषदत्ता देव्यै अत्र ..... गृहाण-गृहाण स्वाहा।

काली नाम है प्यारा तेरा मन की तू उजियाली,
वर्ण तुम्हारा श्याम भले हो लगती तू खुशहाली।
मृग ही है असवारी तेरी उस पर तुम यहाँ आओ,
अर्घ सम्भालो अपना देवी धर्म ध्वजा फहराओ ॥ 7 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे काली देवी अत्र ..... गृहाण-गृहाण स्वाहा।

प्रथम हाथ में खड्ग विराजे दूजे में धनु प्यारा,
तीजे में है बाण सोहता चौथा फल का वारा।
चार भुजा की धारी देवी ''महाकाली'' तुम नामा,
विघन करो सब दूर हमारे पूर्ण करो सब कामा॥ 8॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे महाकाली देव्यै अत्र ..... गृहाण-गृहाण स्वाहा।

दोहा

'गौरी' देवी नाम है, गौर वर्ण तुम जान।
तुम्हें बुलाता आज मैं, तिष्ठो अपने थान॥
कार्य सभी मेरे करो, होवे धर्म उत्थान।
लाभान्वित हो लोग सब, हो जिन शासन शान॥ 9॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे गौरी देव्यै अत्र ..... गृहाण-गृहाण स्वाहा।

खड्गढाल है हाथ में, 'गांधारी' है नाम।
जिन शासन श्रद्धान है, जिन जप आठो याम॥
शान्ति कल्प विधान में, तुम्हें बुलाऊँ आज।
अर्घ दिलाता आपको, पूर्ण करो सब काज॥ 10॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे गांधारी देव्यै अत्र ..... गृहाण-गृहाण स्वाहा।

अष्ट भुजा है आपकी, मेढा वाहन जान।
'ज्वालामालीनि' नाम है, जिनवर का श्रद्धान॥
बड़े प्रेम के भाव से, तुम्हें बुलाऊँ आज।
विघ्न होवे ना कोई, सिद्ध होय सब काज॥ 11॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे ज्वालामालीनि देव्यै अत्र ..... गृहाण-गृहाण स्वाहा।

द्वादश नम्बर आपका, नाम ''मानवी'' मान।
चार भुजा हैं आपकी, धर्म रक्षिका जान॥

साधर्मी हो देवी तुम, बनो सहायक आय।
आठों द्रव्यों को लिया, देता तुम्हें बुलाय॥ 12॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मानवी देव्यै अत्र ..... गृहाण गृहाण स्वाहा।

भुजंग प्रयात्

'वैरोटी' है नाम प्यारा तुम्हारा,
हरो विघ्न सारा यहाँ आके हमारा।
वसु द्रव्य लेकर मैं तुमको दिलाता,
मिले शान्ति मुझको और पाऊँ मैं साता॥ 13॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वैरोटी देव्यै अत्र ..... गृहाण गृहाण स्वाहा।

'अच्युता' देवी प्यारी हो तुम धर्म धारी,
बुलाता तुम्हें आज सुन लो हमारी।
कोई भी विघ्न यहाँ पर आने न पावें,
व्यवस्था करो ऐसी सब सौख्य पावें॥ 14॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अच्युता देव्यै अत्र ..... गृहाण गृहाण स्वाहा।

अहि की सवारी है देवी तुम्हारी,
तुम 'मानसी' नाम है सौख्य कारी।
मैं तुमको बुलाता हूँ तुम देवी आओ,
और विघ्न न होवे व्यवस्था दिलाओ॥ 15॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मानसी देव्यै अत्र ..... गृहाण गृहाण स्वाहा।

'महामानसी' नाम अन्तिम सु प्यारा,
हो हंसासनी तुम हरो दु:ख सारा।
निर्विघ्न होवें ये कारज हमारा,
और आकर के लेओ ये अर्घ तुम्हारा॥ 16॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे महामानसी देव्यै अत्र ..... गृहाण गृहाण स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा

रोहिणी आदि देवियां, महामानसी अन्त।
षोडश अर्घ चढ़ावता, करने दु:ख का अन्त॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं रोहिण्यादि महामानसी पर्यन्त षोडश विद्या देवता: इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं नैवेद्य, दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

दोहा

नीर मँगाया मैं महा, भाँति भाँति नदी तीर।
शान्ति धारा मैं करूँ, हरो हमारी पीर॥

शान्तये शांतिधारा...

शान्ति कल्प विधान पर, पुष्पाञ्जलि कराय।
रोग शोक दु:ख नाश हो, सुख शान्ति को पाय॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि...

षोडश देवी आयकर, करें शान्ति शुभ काम।
हरे अमंगल विश्व का, करे भक्ति निष्काम॥

इति इष्ट प्रार्थना...

चतुर्थ वलय

चतुर्विंशति शासन देवी अर्चना

दोहा

चक्रेश्वरी को आदि ले, सिद्धायिनी है अन्त।
जिन श्रद्धानी आप हैं, भक्ति करें अरिहन्त॥
धर्म वत्सला तुम कही, आओ आओ आज।
निज वैभव परिवार से, पूर्ण करो सब काज॥
सबको हम अर्पण करें, अर्घ भराकर थाल।
सन्तुष्टि सबको मिले, कार्य करो तत्काल॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं चक्रेश्वरी आदि सिद्धायिनी पर्यन्त चतुर्विंशति शासन देवीभ्यो अत्र आगच्छ-आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् स्वाहा॥

चौपाई

जिनवर की तुम भक्ति धारी,
करने में हो तुम अति प्यारी।
'चक्रेश्वरी' है नाम तुम्हारा,
निज वैभव का है भण्डारा॥
निज परिवार सहित यहाँ आओ,
यज्ञ विधि को सफल बनाओ।
देवी तुमको अर्घ दिलाता,
हर्षित मन से तुम्हें बुलाता॥ 1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे चक्रेश्वरी देव्यै अत्र आगच्छ आगच्छ स्वस्थाने तिष्ठ तिष्ठ इदम् अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

तीन भुवन के जो अधिकारी,
जिनने वरी मुक्ति सी नारी।
ऐसे जिनवर को तुम ध्याती,
भक्ति करती हो दिन राती॥
'रोहिणी' नाम तुम्हारा न्यारा,
अर्घ दिलाता तुमको प्यारा।
हे देवी तुम यहाँ पर आओ,
विघ्न हमारे दूरा कराओ॥ 2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे रोहिणी देव्यै अत्रागच्छ ..... समर्पयामि स्वाहा।

नन्त चतुष्टय के जो धारी,
नाथ निरंजन है अविकारी।
समवशरण मैं आप विराजें,
दर्शन करके सब अघ भाजे॥
भक्ता हो ऐसे जिनवर की,
नाम ''प्रज्ञप्ती'' है सुखकरसी।
आह्वानन कर तुम्हें बुलाता,
यज्ञ भाग फिर तुम्हें दिलाता॥ 3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे प्रज्ञप्ती देव्यै अत्रागच्छ...समर्पयामि स्वाहा।

जिनने कर्म शत्रु को मारा,
वो अरिहन्त प्रभु है हमारा।
दृग् सुख वीर्य ज्ञान का धारी,
रत्नाकर है वो दातारी॥
उनकी सेवा तुम करती हो,
जिन शासन महिमा धरती हो।
'वज्रशृंखला' नाम मनोहर,
देता अर्घ सुयोग्य मनोहर॥ 4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वज्रशृंखला देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

श्री जिननाथ जिनेश्वर प्यारे,
हरते जग के संकट सारे।
निज लक्ष्मी के नाथ कहाये,
इसीलिए लक्ष्मी पति गाये॥
'पुरुषदत्ता' देवी है प्यारी,
सम्यक्दृष्टि हो तुम न्यारी।
हम सबकी हो तुम साधर्मी,
अर्घ दिलावें होकर मर्मी॥ 5॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पुरुषदत्ता देव्यै अत्रागच्छ....समर्पयामि स्वाहा।

कर्म घातिया जिनने नाशे,
आतम से आतम परकाशे।
ऐसे जिनवर श्री अरिहन्ता,
जिनको नमें नित्य श्री सन्ता॥
सेवा करती है जो देवी,
नाम ''मोहिनी'' जिन पद सेवी।
अष्ट द्रव्य का अरघ बनाया,
हे देवी हम तुम दिलवाया॥ 6॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मोहिनी देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

तीन रोग को जिसने नाशा,
तीन रत्न को जो परकाशा।
समवशरण के जो हैं स्वामी,
वीतराग सर्वज्ञ है नामी॥
'काली' देवी तुम हो प्यारी,
रूप तुम्हारा अति मनहारी।

देने हेतु अर्घ बनाया,
कार्य करो अब अर्घ दिलाया ॥ 7 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे काली देव्यै अत्रागच्छ..... समर्पयामि स्वाहा।

चन्दा प्रभु जिनवर अरिहन्ता,
तुमने किये कर्म सब हन्ता।
निर्विकार निर्दोष हो स्वामी,
शिवरमणी तेरी अनुगामी ॥
महिष वाहिनी देवी न्यारी,
'ज्वालामालिनी' है सुखकारी।
श्वेत वर्ण है तेरा प्यारा,
देता अर्घ आठ विधि सारा ॥ 8 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे ज्वालामालिनी देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

दिव्य ध्वनि के जो अधिकारी तीन रोग जिन नाशा,
केवलज्ञान सूर्य को पाकर तीन लोक परकाशा।
ऐसे जिनवर की भक्ति तुम करती रहती देवी,
'महाकाली' है नाम तुम्हारा तुम हो जिन पद सेवी ॥ 9 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे महाकाली देव्यै अत्रागच्छ..... समर्पयामि स्वाहा।

सुरपति अहिपति नरपति पूजे 'योगी' शीश झुकाते,
सम्यक्ज्ञान प्रदाता जिनवर के गुण निशदिन गाते।
ऐसे जिनवर की पूजन कर प्रतिपल है हर्षाती,
अर्घ मैं देता तुमको देवी शान्ति सुधा वर्षाती ॥ 10 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मानवी देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

एक उन शत-इन्द्र तुम्हारी निशदिन स्तुति करते,
एक इन्द्र ही ऐसा है जो मात्र वन्दना करते।

सौ इन्द्रों से वन्दित जिनवर उनकी तुम आराधक,
गौरी देवी नाम आप जिन शासन की हो साधक ॥ 11 ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे गौरी देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

धर्मामृत का पान कराकर जिनने मुक्ति पायी,
प्राप्त किया निर्वाण जिन्होंने उनकी महिमा गायी।
उनकी चरण सेविका देवी सचमुच सम्यक् दृष्टि,
अर्पण करता अर्घ आज मैं जिनवर चरणन वृष्टि ॥ 12 ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे गांधारी देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

चिदानन्द चिद्रूप जिनेश्वर तीर्थंकर जिनस्वामी,
नित्यानंदी, निजपदरूपी, जिनवर तुम जग नामी।
ऐसे जिनवर की भक्ति जो प्रमुदित मन से करती,
तुमको अर्पूं अर्घ यहाँ मैं नाम 'वैरोटी' शरणी ॥ 13 ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वैरोटी देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

ध्यान चक्र से जिनने सारे कर्म चक्र क्षय कीना,
धर्मचक्र को धार जिन्होंने जग पावन कर दीना।
ऐसे जिनवर भक्ता देवी तुमको आज बुलाता,
यज्ञ भूमि में आप पधारो करो सभी सुख साता ॥ 14 ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अनन्तमति देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

धर्मनाथ ने धर्म सिखाया मोक्षमार्ग के नेता,
अष्टांग योग और तीन योग से चरणों में चित देता।
व्याघ्र सवारी है देवी तुम नाम 'मानसी' गाया,
अर्पण करता आज अर्घ यह तुमको देने आया ॥ 15 ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मानसी देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

कल्पवृक्ष हो आप जिनेश्वर मनवांछित फल देते,
भविजन तेरा ध्यान लगाकर इच्छित फल को लेते।

ऐसे जिनवर को जजती है 'महामानसी'' नामा,
सम्यक् दर्शन नित हो देवी अर्घ रखूँ सुख धामा ॥ 16 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे महामानसी देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

अडिल्ल छन्द

दोष अठारह रहित जिनेश्वर है महा,
गुण अनन्त भण्डार शास्त्र ये कह रहा।
ऐसी जिनवर भक्त ''जया'' देवी कही,
देऊँ अर्घ बनाय शान्ति हो सब मही ॥ 17 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे जया देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

अक्षय अव्याबाध ज्ञान जिनने लिया,
ज्ञानामृत का पान करा जग को दिया।
जिनपति भक्त महान देवी 'तारा' कहा,
जिनवर चरणन दृष्टि लक्ष एक ही लहा ॥ 18 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे तारा (विजया) देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

तीन लोक तिहु काल जाने एक ही सही,
निकल सकल परमात्म मोक्ष पाई मही।
अष्टापद असवारी हरित् काया लहे,
'अपराजिता' है नाम यही सब जग कहे ॥ 19 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अपराजिता देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

मुनिसुव्रत भगवान शनि के देवता,
तुम पर मैं बलि जाऊँ चरण पद सेवता।
सम्यक् दृष्टि आप करें जिन अर्चना,
देते अर्घ महान पधारो प्रार्थना ॥ 20 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे बहुरूपिणी देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

मोह किया चकचूर दूर कर सब कर्म को,
निज वैभव को पाय फैलाया धर्म को।
मगर है वाहन जान ''चामुण्डा'' देवी का,
अर्पण है यह अर्घ तुम्हें जिन सेविका॥ 21॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे चामुण्डा देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

समुद्र विजय के लाल शिवा माता कही,
नगर द्वारिका जन्म हुई हर्षित मही।
ऐसे नेमिनाथ चरण तुम सेवती,
यज्ञ भूमि में आय विराजो देखती॥ 22॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अम्बिका देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

पार्श्वनाथ भगवान बने आराध्य है,
तिनकी भक्ति एक यहीं बस साध्य है।
कमठ मान चकचूर किया तुम आयकर,
अर्पण है यह अर्घ तुम्हें हर्षायकर॥ 23॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

जिनका शासन अभी तक चल रहा,
वर्द्धमान भगवान नाम सब जग कहा।
उनकी शासन देवी नाम सिद्धायिका,
लेकर के यह अर्घ बनो गुण गायिका॥ 24॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे सिद्धायिनी देव्यै अत्रागच्छ.... समर्पयामि स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

नरेन्द्र छन्द

चक्रेश्वरी को प्रथम मनाऊँ अन्तिम है सिद्धायिका,
यज्ञ भाग मैं अर्पित करता तुम हो जिनवर गायिका।

यज्ञ भूमि में आप पधारो विघ्न हमारे दूर करो,
मिथ्यादृष्टि उत्पाती है उनका मिथ्या दूर करो ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं चक्रेश्वरी आदि सिद्धायिका पर्यन्त चतुर्विंशति जिन शासन रक्षिका देवीभ्यो जल-फलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

नीर मँगाया मैं महा, भाँति भाँति नदी तीर।
शांति धारा मैं करूँ, हरो हमारी पीर ॥

शान्तये शान्तिधारा...

शांति कल्प विधान पर, पुष्पाञ्जलि कराय।
रोग शोक दुःख नाश हो, सुख शांति को पाय ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि....

शासन देवी आयकर, करें शांति शुभ काम।
हरे अमंगल विश्व का, करें भक्ति निष्काम ॥

इति इष्ट प्रार्थना....

पंचम वलय

द्वात्रिंशद इन्द्र अर्चना

अडिल्ल छन्द

बत्तीस इन्द्र बुलाय यहाँ मैं थापता,
आओ यज्ञ मंझार सभी को बुलावता।
देता अर्घ बनाय सभी यहाँ आइये,
जिनवर सेवक आप प्रभु गुण गाइये॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं द्वात्रिंशत् इन्द्र देवा अत्र आगच्छ-आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ-तिष्ठ सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा। पुष्पाञ्जलि।

दोहा

परिवार सहित तुम आइये, 'असुर' कुमार सु इन्द्र।
आह्वानु मैं आपको, भक्ति करो जिनेन्द्र॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ ये, लीजे तुम यहाँ आय।
कार्य हमारा पूर्ण हो, यही भावना भाय॥ 1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्वलक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिह्न सपरिवार हे असुर कुमार इन्द्र अत्रागच्छ-आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ-तिष्ठ इदमर्घ्यम् प्राद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलि स्वस्तिकं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

धरणेन्द्र रूप है आपका, 'नाग' कुमार सु देव।
जिनवर के तुम भक्त हो, करते चरण सु सेव॥
शुद्ध बनाया अर्घ में, तुमको अर्पूं आज।
प्रसन्नचित्त होकर यहाँ, शीघ्र करो सब काज॥ 2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... नाग कुमार इन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

मन वच काय बुलावता, यहाँ पधारो आप।
अर्घ सम्हालो तुम यहाँ, और करो निष्पाप॥

'सुपर्ण' कुमार सु इन्द्र तुम, सम्यक्दृष्टि आप।
धर्म ध्यान से सहित हो, करते जिनवर जाप॥ 3॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... सुपर्ण कुमारेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

नाम है 'द्वीप' कुमार तुम, बड़े सलौने आप।
सौम्य छवि है आपकी, नाशो सब संताप॥
सस्नेह बनाया अर्घ मैं, तुम्हें चढ़ाऊँ देव।
साधर्मी हो आप तो, जिनवर करो सुसेव॥ 4॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... द्वीप कुमारेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

उदधि कुमार हे इन्द्र तुम, आओ मिल परिवार।
आयुध वाहन चिह्न युत, लेओ अर्घ सम्हार॥
हम पूजा जिनवर की करें, करने मन अविकार।
तुम भी आओ अब यहाँ, तजने गलत विचार॥ 5॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... उदधि कुमारेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

स्तनित कुमार पधारिये, होकर खुश परिणाम।
जिनवर की भक्ति करो, मिलकर आठों याम॥
हम भी भक्ति कर रहे, तुम भी आओ आज।
अर्घ दिलाता मैं तुम्हें, करने अपना काज॥ 6॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... स्तनित कुमारेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

विद्युत जैसा वेग है, विद्युत जैसी चाल।
विद्युत जैसी है क्रिया, विद्युत जैसा हाल॥
विद्युत इन्द्र पधारिये, करने मन अविरुद्ध।
अर्घ सम्हालो आयकर, भक्ति करो विशुद्ध॥ 7॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... विद्युत कुमारेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

दिशा इन्द्र का मैं यहाँ, करता हूँ आह्वान।
दशों दिशाएँ शुद्ध हो, बढ़े धर्म की शान॥

लेकर अब तुम आइये, अपना सब परिवार।
तुम्हें बुलाऊँ मैं यहाँ, देऊँ अर्घ सम्हार॥ 8॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... दिक्कुमारेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

कामिनी छन्द

अष्ट द्रव्य का मैं, सु अर्घ, देव हे दे रहा,
आइये यज्ञ में, आह्वान मैं कर रहा।
वह्नि कुमार देव यहाँ, यज्ञ में आइये,
कार्य पूर्ण कीजिये, धर्म को बढ़ाइये॥ 9॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... अग्नि कुमारेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

पवन देव आपकी, थापना कर रहा,
बैठिये थान पर, मैं तुम्हें बुला रहा।
वायु देवता यहाँ, परिवार संग आइये,
जिनेन्द्र भक्त आप हो, अर्घ ले जाइये॥ 10॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... वायु कुमारेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

किन्नरेन्द्र भक्ति से, यहाँ पर आओ तुम,
नीर गंध अक्षतादि, अर्घ को पाओ तुम।
शान्ति वातावरण, यहाँ पर बनाइये,
कार्य निर्विघ्न हो, युक्ति ये बिठाइये॥ 11॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... किन्नरेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

आप अपने यहाँ, संग सहित आइये,
एक बस प्रार्थना, कार्य निपटाइये।
सम्यक्त्व दृष्टि आपकी, आप तो महान है,
गाते सारे ग्रन्थ हैं, जानता जहान है॥ 12॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... किम्पुरुषेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

मिथ्यात्व से दूर हो, भक्ति एक लक्ष्य है,
जिनेन्द्र के चर्ण में, आपका लक्ष्य है।
महोरग इन्द्र में, आपको बुलावता,
अर्घ आप लीजिये, मैं तुम्हें दिलावता॥ 13॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... महोरगेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

समवशरण में भला, आपका स्थान है,
धर्म श्रद्धा तुम्हें आप गुण खान है।
इन्द्र में आप, गन्धर्व इन्द्र गावते,
जो बुलावे जहाँ, आप वहाँ धावते॥14॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... गन्धर्वेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

यक्ष के यक्ष हो, देवियाँ आपकी,
उनके संघ आइये, अर्चना आपकी।
भक्ति भाव से यहाँ, पूजिये जिनेन्द्र को,
कीजिये भक्ति और, पूजिये जिनेन्द्र को॥ 15॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं .....यक्षेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

नाम राक्षस भला, हो तो भी क्या हुआ,
काम राक्षस नहीं, ये ही श्रेष्ठ है हुआ।
आपका ध्यान है, जिनेन्द्र के चर्ण में,
इसलिए अर्घ दूँ, भाँति-भाँति वर्ण मैं॥ 16॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... राक्षसेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

दोहा

भूत जाति के इन्द्र तुम, तुम्हें बुलाऊँ आज।
जिनवर के तुम भक्त हो, पूर्ण करो सब काज॥

शान्ति कल्प विधान में, यज्ञ थान पर आप।
अपना अर्घ सु लीजिये, नशो पाप सब ताप॥ 17॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... भूतेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

परिवार सहित तुम आइये, पिशाच जाति के इन्द्र।
आह्वानन थापन करूँ, तुम हो भक्त जिनेन्द्र॥
जिनपद में अनुराग है, भक्ति बहुत अपूर्व।
अर्घ दिलाता आपको, होकर हर्ष अपूर्व॥ 18॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... पिशाचेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

सौम्य सदा शीतल रहो, करते पूर्ण प्रकाश।
कुमुदनी जनक कहावते, इन्द्र देव तुम खास॥
जिनवर को तुम नित नमो, नमो जोड़कर हाथ।
अर्घ सम्हालो आप ये, कभी न छोड़ो साथ॥ 19॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... सोमेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

भानु सूर्य सवितृ तुम, दिनकर जनक है नाम।
नाम प्रभाकर आपका, विकसित आठों याम॥
सम्यक् दृष्टि आप हो, यहाँ पधारो आन।
नीरादि वसु द्रव्य ले, और बढ़ाओ शान॥ 20॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... सूर्य इन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

अपने निज वैभव के संगी परिवार संग में राजे,
वाहन आदि पुण्य संपदा के संग में जो साजे।
जिनवर की जो भक्ति करते जिनवर भक्त कहाते,
अर्घ समर्पण करके हम 'सौधर्म' इन्द्र बुलाते॥ 21॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... सौधर्मेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

जन्म समय जो चंवर ढुराते जिनवर भक्ति करते,
तीन योग से निशदिन प्रतिपल ध्यान उन्हीं का करते।
ऐसे श्री 'ईशान' इन्द्र को हम सब यहाँ बुलाते,
आओ आओ यज्ञ भूमि पर आह्वानन सुख पाते ॥ 22 ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... ईशानेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

ईशान इन्द्र के संग में तुम भी अर्चन मन से करते,
चंवर ढुरा कर जिनवर की तुम भक्ति अनुपम करते।
यज्ञ भूमि पर तुम्हें बुलाते मन में अति हर्षाते,
अर्घ समर्पण तुमको करते और तुम्हें बुलवाते ॥ 23 ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... सनत्कुमारेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

वाहनादि से तुम भूषित हो जैन धर्म श्रद्धानी,
वीतराग अरिहन्त प्रभु के निश दिन हो तुम ध्यानी।
भक्ति की शिक्षा मिलती है तुमसे हम कुछ पावें,
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर अर्घ तुम्हें दिलावें ॥ 24 ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... माहेन्द्र कुमारेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

दिव्य विभूति दिव्य सामग्री से तुम अर्चन करते,
भक्त बने तुम तीर्थेश्वर के आह्वानन हम करते।
एक प्रार्थना है बस तुमसे यज्ञ में तुम यहाँ आओ,
हम भी पूजा करते प्रभु की तुम भी उन गुण गाओ ॥ 25 ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... ब्रह्म कुमारेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

साधर्मी हो आप हमारे हमसे ज्यादा शक्ति,
फिर भी तुम हर पल करते हो जिनवर प्रभु की भक्ति।
ऐसे जिनवर भक्त आप हो तुम को आज रिझाता,
शान्ति कल्प मण्डल विधान में तुमको आज बुलाता ॥ 26 ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... लान्तवेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

दोष अठारह रहित जिनेश्वर निज आतम अनुरागी,
समवशरण के अधिपति जिनवर मुक्ति रमा सहभागी।
'शुक्र' इन्द्र हो आप निराले अनुपम श्रद्धा वाले,
अर्घ दिलाकर तुमहें मनाते जिनवर भक्ति वाले॥ 27॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... शुक्रेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

'सतार' इन्द्र तुम शत शत नमते तीर्थंकर जिन राया,
अनुपम पुण्य कमाते हो तुम ऐसा अवसर पाया।
आप यहाँ पर आओ देवा सहयोग हमको देना,
जिनवर भक्ति करना तुम भी अर्घ ये अपना लेना॥ 28॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... सतारेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

रोला छन्द

जिन वृष श्रद्धा आप, सतत हृदय में रहती,
सम्यक्दृष्टि आप, जिनवाणी यह कहती।
इसी यज्ञ में देव, तुमको आज बुलाता,
विघ्न करो सब दूर, देओ सब सुख साता॥ 29॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... आनतेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

पूजा शान्ति कल्प, मिल कर यज्ञ रचाया,
होवें निर्विघ्न कार्य, तुमको आज बुलाया।
प्राणत स्वर्ग के इन्द्र, लेकर निज परिवारा,
आओ यज्ञ मझार, लेओ अर्घ सम्हारा॥ 30॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... प्राणतेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

आरण इन्द्र को आज, ससम्मान बुलाता,
उनका जहाँ है थान, वहाँ पर आज बिठाता।

देता साथ में अर्घ, कार्य करो अब पूरा,
भक्ति करो इन्द्र आज, जिसने कर्म को चूरा ॥ 31 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... आरणेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

अच्युत अन्तिम इन्द्र, आओ हर्ष मनाके,
भक्ति करो तुम आन, अपना मन हर्षा के।
श्रद्धा तुमको देव, जिनवर की है निराली,
दर्शन कर लो आज, जो है मुक्ति वाली ॥ 32 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं ..... अच्युतेन्द्र अत्र ..... इति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

भुजंग प्रयात्

बत्तीस इन्द्रों को यहाँ पर बुलाऊँ,
देकर के अर्घ उन्हें यहाँ बिठाऊँ।
निर्विघ्न सारे हों कार्य हमारे,
यही भावना है सभी विघ्न टारे ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं द्वात्रिंशत् इन्द्र देवा: जल-फलादि पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा

नीर मँगाया मैं महा, भाँति-भाँति नदी तीर।
शांति धारा मैं करूँ, हरो हमारी पीर ॥

शान्तये शान्ति धारा...

शांति कल्प विधान पर, पुष्पाञ्जलि कराय।
रोग शोक दु:ख नाश हो, सुख शांति को पाय ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि....

इति इष्ट प्रार्थना...

षष्ठ वलय

दश दिक्पाल देवता अर्चना

. ग-सूर्योदय-जिसने . ग- द्वेष-कामादि

दशों दिशा के दिक्पालों का आह्वानन मैं करता हूँ,
पुष्पाञ्जलि मैं करता उनको श्रेष्ठ थान पर रखता हूँ।
दशों देव तुम यहाँ पधारो दशों दिशाएँ कर दो शुद्ध,
बाधा कोई आये यहाँ नहीं हो जावें सब कार्य विशुद्ध॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्रादि दश दिक्पाला अत्र आगच्छ-आगच्छ स्वस्थाने तिष्ठ तिष्ठ अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् स्वाहा॥ पुष्पाञ्जलि॥

हे दीन बन्धु श्रीपति....

हे 'इन्द्र' देव आपको मैं अर्घ दे रहा,
तुम आइये स्थान पर तुम्हें बुला रहा।
सब विघ्न मेरे नाशिये बस एक प्रार्थना,
हो कार्य सारा शान्ति से कोई विघ्न होय ना॥ 1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे इन्द्रदेव अत्रागच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ इदमर्घ्यम् पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभाग च यजामहे प्रतिगृह्यता-प्रतिगृह्यता इति स्वाहा।

दिक्पाल हो तुम 'अग्नि' देव आइये यहाँ,
जिन भक्त हो इस यज्ञ में पधारिये यहाँ।
ये अर्घ तुम्हें दे रहा ये अर्घ लीजिये,
ना विघ्न होवे कोई वो कार्य कीजिये॥ 2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अग्निदेव अत्र ..... इति स्वाहा।

'यम' देवता तुम आइये परिवार संग में,
निज वाहनादि और परिकर भी संग में।

सब आइये और बैठिये अपने ही थान पर,
हो विघ्न सारे शान्त होवे गर्व धर्म पर॥ 3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे यम देवता अत्र ..... इति स्वाहा।

है रीछ वाहन आपका है हाथ में मुद्गर,
है रत्न जैसी कान्ति और वर्ण श्याम वर्ण।
उस 'नैऋत' दिक्पाल को मैं शीघ्र बुलाऊँ,
हो यज्ञ सारा शान्ति से यह भावना भाऊँ॥ 4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे नैऋत देवता अत्र ..... इति स्वाहा।

इस यज्ञ में तुम देवता 'वारुण' पधारिये,
है आपका वाहन मकर बैठ आइये।
स्वर्ण जैसा रंग है हे देव आपका,
जो शोभता है भाता है देह आपका॥ 5॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वारुण देवता अत्र ..... इति स्वाहा।

ये अश्व का वाहन हे देव लागता प्यारा,
जो वायु वेग सम है और सबसे है न्यारा।
हे वायुदेव आपका आह्वान मैं करूँ,
इस यज्ञ में तुम आइये मैं अर्घ को धरूँ॥ 6॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वायु देवता अत्र ..... इति स्वाहा।

तुम स्वर्ण के समान रूप मन को मोहता,
आरूढ़ होकर आइये विमान रूढ़ता।
है नाम तुम 'कुबेर' जो कि सबको मन भावे,
ये काम सब निर्विघ्न हो हम अर्घ दिलावे॥ 7॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे कुबेर देवता अत्र ..... इति स्वाहा।

वृषभादि रूढ़ आप हो त्रिशूल हस्त है,
धवलोज्वलांग रूप है जो कि प्रशस्त है।

'ईशान' देवता को हम अर्घ दिलाते,
निर्विघ्न सारे कार्य हो यह भावना भाते ॥ 8 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे ईशान देवता अत्र ..... इति स्वाहा।

है कूर्म वाहन आपका पद्मावती पति,
तुम कार्य को सम्भालिये जो होवे ना क्षति।
'धरणेन्द्र' 'पार्श्वयक्ष' ये दो नाम तुम्हारे,
ये कार्य सारे पूर्ण हों निर्विघ्न हमारे ॥ 9 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र देवता अत्र ..... इति स्वाहा।

तुम सिंह समारूढ़ हो हे रोहिणी ईशम्,
तुम ऊर्ध्व दिशा के कहे हो पूर्ण अधीशम्।
निज आपके परिवार संग यहाँ पधारिये,
आह्वान आपका करूँ मैं कष्ट वारिये ॥ 10 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे सोम देवता अत्र ..... इति स्वाहा।

दोहा

नीर मँगाया मैं महा, भाँति-भाँति नदी तीर।
शांति धारा मैं करूँ, हरो हमारी पीर ॥

शान्तये शांति धारा...

शांति कल्प विधान पर, पुष्पाञ्जलि कराय।
रोग शोक दुःख नाश हो, सुख शांति को पाय ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलि...

इति इष्ट प्रार्थना..

सप्तम वलय

चतुर्विंशति यक्ष अर्चना

दोहा

चौबीसों तुम यक्ष को, यहां बुलाऊँ आज।
आह्वानन थापन करूँ, करने पूरण काज॥
सम्यक्दृष्टि आप हो, जिनवर का श्रद्धान।
निशदिन तुमको हे महा, बढ़े धर्म की शान॥
पुष्पांजलि थापन कर, शीघ्र पधारो आप।
यज्ञ भूमि में बैठिये, नशे पाप सब ताप॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं चतुर्विंशति यक्षदेवता अत्रागच्छ-अत्रागच्छ स्व स्थाने तिष्ठ-तिष्ठ इति पुष्पांजलि क्षिपेत्।

नरेन्द्र छन्द

सोने जैसी कान्ति वाला देह आपका प्यारा,
बैल सवारी बनी आपकी चार भुजा सुखकारा।
जिन शासन के रक्षक तुम हो 'गोमुख' यक्ष सुप्यारे,
जिनवर का श्रद्धान है तुमको जिनशासन रखवारे॥ 1॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे गोमुख यक्ष अत्रागच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ-तिष्ठ इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिक यज्ञभागं च यज्ञामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

अजितनाथ के शासन रक्षक गजवाहन असवारी,
चतुरानन हो आठ भुजा हैं मोहनी सूरत प्यारी।
तुम्हें बुलाता आज यहाँ मैं शीघ्र यहाँ पर आओ,
शीघ्र हटाओ विघ्न हमारे अर्घ ये अपना पाओ॥ 2॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे महायक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

कृष्ण रंग है भले आपका फिर भी प्यारा लागे,
मिथ्यादृष्टि देव न आवे तुम से डरकर भागे।
तीन नेत्र की शोभा न्यारी किस मुख से हम गावें,
शासन रक्षक हो तुम देवा प्यारे तुमको अर्घ दिलावें॥ 3॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे त्रिमुख यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

'यक्षेश्वर' है नाम आपका कृष्ण वर्ण मनहारी,
जिन चरणन में थान तुम्हारा शोभा सबसे न्यारी।
जिनवर के तुम भक्त कहाते सम्यक्दृष्टि प्यारे,
चौथा है गुण स्थान आपका गाते ग्रन्थ ये सारे॥ 4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे यक्षेश्वर यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

गरुड़ सवारी रही तुम्हारी चार भुजा तुम धारे,
समवशरण में आप विराजो शासन रक्षक वारे।
त्रिलोय पण्णति ने ये गाया तुम हो सम्यक् दृष्टि,
ऐसा तुमको जो नहीं माने वो है मिथ्यादृष्टि॥ 5॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे तुम्बरु यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

वसुनन्दी आचार्य तुम्हारी चार भुजा बतलायी,
मृग वाहन है देव तुम्हारा कृष्ण वर्ण सुखदायी।
साधर्मी हो आप हमारे इससे तुम्हें बुलाता,
आ करके ये अर्घ सम्हालो तुमको थान दिलाता॥ 6॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे कुसुम यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

दो ही भुजाएँ कही आपकी प्रथम त्रिशूल विराजे,
दूजे में है दण्ड आपके लखकर दुष्ट है भाजे।
श्याम वर्ण मनहारी तेरा रूप मनोहर न्यारा,
जिन शासन उत्थान करो तुम देता अर्घ सुप्यारा॥ 7॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वरनन्दी यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

चन्द्र प्रभु के चरणकमल में तुमने ध्यान लगाया,
सम्यक् दृष्टि हो तुम देवा हमने अर्घ दिलाया।
कापोत सवारी बनी आपकी छवि मनोहर लागे,
'श्याम' यक्ष है नाम तुम्हारा जिनवर भक्ति जागे॥ 8॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे श्याम यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

दोहा

पुष्पदन्त भगवान के, 'अजित' यक्ष हो आप।
श्वेत वर्ण है आपका, मिटे सभी संताप॥
चार भुजा हैं आपकी, कछुआ वाहन जान।
जिन शासन रक्षा करो, देता अर्घ महान॥ 9॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अजित यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

कमलासन है आपका, आठ भुजा बलवान।
शीतल शासन देव तुम, करो धर्म उत्थान॥
श्वेत वर्ण अरु आठ भुज, 'ब्रह्म' यक्ष तुम नाम।
आओ यज्ञ स्थान पर, पूर्ण करो सब काम॥ 10॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे ब्रह्म यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

गोसुत वाहन आपका, तीन नेत्र सुखकार।
'ईश्वर' यक्ष सुहावने, चार भुजा तुम धार॥
श्रद्धानी जिन धर्म के, जिनवर भक्त हो आप।
इसीलिए ये अर्घ मैं, देता हूँ निष्पाप॥ 11॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे ईश्वर यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

'कुमार' यक्ष तुम नाम है, हंस सवारी आप।
श्वेत वर्ण शोभा बनी, अर्घ सम्हालो आप॥
तीन नेत्र षट् भुज कही, यही तुम्हारा रूप।
भक्त बने जिनदेव के, भक्ति करो अनूप॥ 12॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे कुमार यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

हरित् वर्ण मन मोहना, द्वादश भूजा अनूप।
मोर सवारी आपकी, छः मुख रूप अनूप॥
समवशरण में राजते, जिनवर चरणन आप।
जिनवर गुण में मग्न हो, अर्घ सम्हालो आप॥ 13॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे चतुर्मुख यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

रक्त वर्ण शोभा बनी, वर्णन करी न जाय।
मगर सवारी आपकी, है सबको सुखदाय॥
'पाताल' यक्ष तुम नाम है, मुख है तीन सुजान।
जिन शासन रक्षा करो, जिनवर भक्त महान॥ 14॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पाताल यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

धर्मनाथ भगवान के, समवशरण में आप।
चरणकमल में बैठते, होने को निष्पाप॥
'किन्नर' नाम सुहावना, सुन्दर रंग प्रवाल।
मीन सवारी तुम करी, करो धर्म खुशहाल॥ 15॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे किन्नर यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

सूकर वाहन है भला, भुजा चार चित धार।
जिनवर के तुम भक्त हो, कृष्ण वर्ण सुखकार॥
'गरुड़' यक्ष हे देवता, यहाँ पधारो आप।
अर्घ बनाकर मैं रखूँ, आओ पाओ आप॥ 16॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे गरुण यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

रोला छन्द

पक्षी वाहन आप, काला वर्ण कहाया,
चार भुजा है आप, रूप ये सब मन भाया।
कुन्थु जिनेश्वर आप, शासन यक्ष कहाये,
देता तुमको अर्घ, जो तुमको मन भाये॥ 17॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे गन्धर्व यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

अरह श्री भगवान, तीन पदों के धारी,
उनके यक्ष हो आप, तीन अक्ष के धारी।
नाम 'खगेन्द्र' है आप, शंख सवारी जानो,
षट् मुख आपके देव, जिन शासन श्रद्धानो॥ 18॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे खगेन्द्र यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

इन्द्र चाप सा रूप, गज वाहन है तेरा,
चतुरानन हे देव, कार्य करो अब मेरा।
अष्ट भुजा है आप, सम्यक्दृष्टि प्यारे,
देता अर्घ बनाय, कष्ट हरो अब सारे॥ 19॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे कुबेर यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

गौरांगी छवि आप, बैल सवारी तुम्हारी,
तुमको मनाता आज, देता अर्घ सम्हारी।
जिन शासन श्रद्धान, तुमको निशदिन रहता,
जिनवर के तुम भक्त, चरणन ध्यान है रहता॥ 20॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वरुण यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

लाल अंग है तुम्हार, वृषभ सु वाहन जानो,
चतुर्मुखी सुखकार, आठ भुजा बलवानो।
'भृकुटी' यक्ष है नाम, नमि जिनवर का दासा,
देते तुमको अर्घ, पूर्ण करो सब आसा॥ 21॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे भृकुटी यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

पुष्पासन है नेक, नर वाहन है तेरा,
काला रंग सुहाय, तीन सुमुख है तेरा।
नेमि जिन श्रद्धान, तुमको प्यारा सारा,
'गोमेद' यक्ष अनूप, अर्घ सम्हारो सारा॥ 22॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे गोमेद यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

नीलाम्बर है वर्ण, कछुआ वाहन प्यारा,
अहि का चिह्न है शीश, ''धरणेन्द्र'' सुखकारा।
दूजा नाम है आप, 'पारस यक्ष' कहाते,
विक्रिया ऋद्धि आप, मनचाहा रूप बनाते॥ 23॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

मूँगा रंग समान, रूप अनूप तुम्हारा,
सिर पर धर्म का चक्र, तू है धारण हारा।
दो ही भुजा हैं देव, ''मातंग'' यक्ष तुम्हारी,
कारज हो निर्विघ्न, ये ही आस हमारी॥ 24॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मातंग यक्ष अत्र ..... इति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा

प्रथम सु गोमुख यक्ष है, अन्तिम है मातंग।
पूरण अर्घ दिलावता, शान्ति न होवे भंग॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं गोमुख यक्षादि मातंग यक्ष पर्यन्त चतुर्विंशति शासन यक्ष देवता इदम् अर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां इति पूर्णार्घ्यम् समर्पयामि स्वाहा।

दोहा

सम्यग्दृष्टि देव है, चौबीसो यक्षेश।
पुष्पाञ्जलि मैं कर रहा, शांति होय हमेश॥

शान्तये शान्ति धारा.../पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्...

इति इष्ट प्रार्थना...

अष्टम वलय

नवग्रह अर्चना

जोगी रासा

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु कवि शनि ग्रह तुम जानो,
राहु केतु सभी मिलाकर नवग्रह तुम पहचानो।
इनका आह्वानन करता हूँ विघन सभी नश जावे,
नवग्रह पीड़ा कभी न होवे सब जन शांति पावे॥

ॐ ह्रीं नवग्रहा: ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् स्वाहा, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्वाहा, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा॥ पुष्पाञ्जलि॥

नरेन्द्र छंद

रक्त वर्ण है सूर्य ग्रह का गोचर का अधिकारी,
गोचर में आता है वह जब करता सबकी ख्वारी।
ग्रह शान्त हो जाये जिनवर आनन्द खुशियाँ गावें,
सूर्य ग्रह की पीड़ा से हम सब जन साता पावे॥ 1॥

ॐ ह्रीं सूर्य ग्रह अत्र अवतर अवतर स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिक यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

चन्द्र ग्रह भी है सुनिराला दूजा ग्रह है गाया,
गोचर में यह भी जब आवे मानस मन भरमाया।
चन्द्र ग्रह की शांति हेतु मिलकर अर्घ चढ़ाओ,
मन में शांति हो जावे तुम यही भावना भाओ॥ 2॥

ॐ ह्रीं चन्द्र ग्रह अत्र ..... इति स्वाहा।

ग्यारम घर का है अधिकारी अपने घर का स्वामी,
दूर हटाता है यह ग्रह जो होती है कुछ खामी।

इसकी शांति हेतु मैं यह आठों द्रव्य दिलाया,
उसे दिलाकर मंगल ग्रह की शांति मैं करवाया॥ 3॥
ॐ ह्रीं मंगल ग्रह अत्र ..... इति स्वाहा।

चौथा नम्बर बुध का है जो बुद्धि हरता देता,
गोचर में जब यह भी आवे बुद्धि महा हर लेता।
उसे मनाने को अब मैंने इच्छित अर्घ बनाया,
महादशा इसकी मिट जावे यही भावना भाया॥ 4॥
ॐ ह्रीं बुध ग्रह अत्र ..... इति स्वाहा।

छठवें घर का है यह मालिक देवों का गुरु गाया,
पीत वस्तु भी इसे है प्यारी ऐसा सब बतलाया।
वर्ष अठारह की इसकी तो महादशा कहलाती,
इसे दिलाऊँ अर्घ आज मैं मन चिन्ता मिट जाती॥ 5॥
ॐ ह्रीं गुरु ग्रह अत्र ..... इति स्वाहा।

राक्षस का है गुरु इसे तुम शुक्र नाम से जानो,
बीस वर्ष की महादशा है ज्योतिष से तुम मानो।
इसकी पीड़ा भी दु:खदायी क्लेश है पैदा करती,
इसीलिए तो जनता सारी इसकी पूजा करती॥ 6॥
ॐ ह्रीं शुक्र ग्रह अत्र ..... इति स्वाहा।

ढैया साढ़ेसाती है यह दो ही भेद बताये,
महादशा है उन्नीस वर्षी कैसे कटे कटाये।
शनि देव से सब है हारे इनको शीश झुकाते,
इनके नाम से सारे ही नर-नारी भी डर जाते॥ 7॥
ॐ ह्रीं शनि ग्रह अत्र ..... इति स्वाहा।

राहु ग्रह भी शनि का साथी ये भी है उत्पाती,
राहु आवे गोचर में तो आपत्ति आ जाती।

राहु ग्रह की पीड़ा सारी नश जावे अघकारी,
इसीलिये मैं अर्घ चढ़ाता होता मन खुशहारी ॥ 8 ॥

ॐ ह्रीं राहु ग्रह अत्र ..... इति स्वाहा।

केतु ग्रह भी अजब निराला सिर नहीं है धड़वाला,
ध्वजा चिह्न है इसका जानो करता है मतवाला।
राहु जैसा है यह जानो ये भी है दु:खदाई,
जन मन शांति पावे सारे अर्घ चढ़ावो भाई ॥ 9 ॥

ॐ ह्रीं केतु ग्रह अत्र ..... इति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

सारे नवग्रह जितने भी हैं इनसे पीड़ा नशती,
चौबीसों जिनवर जो ध्याता है शांति उसके बसती।
इसीलिये तुम चौबीस जिनवर मिलकर सारे ध्याओ,
नवग्रह की बाधा हट जाती ''योगी'' प्रभु गुण गाओ ॥

ॐ ह्रीं नवग्रह देवता: इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा

शीतल प्रासुक नीर लेय, कंचन भृंग भराय।
शांति धारा मैं करूँ, ग्रह शांत हो जाय ॥

शान्तये शांतिधारा...

पुष्पांजलि अर्पित करूँ, नाना कुसुम मँगाय।
श्री जिनवर पद धोक दे, कर्म कलंक नक्षाय ॥

पुष्पांजलि क्षिपेत्...

नवग्रह की पीड़ा हटे, ध्यावे बीस और चार।
रिद्धि सिद्धि समृद्धि हो, ''योगी'' शिवपुर जार ॥

इति इष्ट प्रार्थना...

ईशान दिशा

अनावृत यक्ष अर्चना

राग : सूर्योदय - जिसने राग-द्वेष-कामादिक...

जम्बू वृक्ष पे वास तुम्हारा जम्बू द्वीप के स्वामी हो,
'अनावृत' है नाम तुम्हारा जिनवर गुण अनुगामी हो।
भवन तुम्हारा महा मनोहर रत्नजड़ित कहलाता है,
देता हूँ मैं अर्घ बुलाके करो सभी सुख साता है॥

ॐ ह्रीं दशदिशाधिनाथं त्रैलोक्य दण्डनायकं जम्बू द्वीपाधिपतिं गरुड़पृष्ठमारूढं स्निग्ध भृङ्गज्जनाभमक्षसूत्र कमण्डलु व्यग्र हस्तं चतुर्भुजं शङ्ख चक्र विधृत भुजा दण्डं यक्षिणी सहितं सपरिजनं सपरिवारमनावृत देवमाह्वयामीति स्वाहा।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अनावृत देव ! अत्रागच्छ-आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ सन्निहिताश्च भव भव वषट् स्वाहा। पुष्पाञ्जलि।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अनावृत देवाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

श्री क्षेत्रपाल अर्चना

स्रग्धरा छन्द

क्षेत्रपाल क्षेत्र की, आप रक्षा करो,
विघ्न नाशो सभी, और सुरक्षा करो।
विघ्न सभी नाश हो, इसलिए थापता,
बैठिये थान पर, आपको बुलावता॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे क्षेत्रपाल देवा: अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्वाहा। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

प्रासुक मीठा शीतल जल ले कंचन भृंग भराया,
विघ्न शान्ति के हेतु मैंने तुमको आज चढ़ाया।
क्षेत्रपाल जिनमत श्रद्धानी जिनवर भक्त कहाओ,
जिनभक्तों की रक्षा करते सारे विघ्न नशाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय इदम् जलम् समर्पयामि स्वाहा।

घिसकर पीला चंदन मैंने कर्पूर संग मिलाया,
तिलक करूँ मैं तुम मस्तक पर मन में शांति पाया।
क्षेत्रपाल जिनमत श्रद्धानी जिनवर भक्त कहाओ,
जिनभक्तों की रक्षा करते सारे विघ्न नशाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय गन्धम् समर्पयामि स्वाहा।

अक्षत प्यारे धोकर मैंने सुन्दर पुंज बनाया,
तुमको अर्पित करके देवा मन में अति हर्षाया।
क्षेत्रपाल जिनमत श्रद्धानी जिनवर भक्त कहाओ,
जिनभक्तों की रक्षा करते सारे विघ्न नशाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय अक्षतं समर्पयामि स्वाहा।

फूलों की मैं माल बनाई गंध सुगंधित प्यारी,
तुमको मैं पहनाऊँ देवा और जाऊँ बलिहारी।
क्षेत्रपाल जिनमत श्रद्धानी जिनवर भक्त कहाओ,
जिनभक्तों की रक्षा करते सारे विघ्न नशाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय पुष्पमालं समर्पयामि स्वाहा।

मोदक शुद्ध सुवासित प्यारा मैंने आज बनाया,
अर्पित करता हूँ मैं तुमको तुमसे नेह लगाया।
क्षेत्रपाल जिनमत श्रद्धानी जिनवर भक्त कहाओ,
जिनभक्तों की रक्षा करते सारे विघ्न नशाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय नैवेद्यम् समर्पयामि स्वाहा।

मन्दिर जगमग होवे तेरा तेल की ज्योत जलाई,
जैन धर्म की रक्षा करना यही भावना भायी।
क्षेत्रपाल जिनमत श्रद्धानी जिनवर भक्त कहाओ,
जिनभक्तों की रक्षा करते सारे विघ्न नशाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय दीपम् समर्पयामि स्वाहा।

दशविध की मैं धूप बनायी कृष्णागरू मिलाया,
सन्मुख धूप जलाऊँ देवा हर्षित होकर आया।
क्षेत्रपाल जिनमत श्रद्धानी जिनवर भक्त कहाओ,
जिनभक्तों की रक्षा करते सारे विघ्न नशाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय धूपम् समर्पयामि स्वाहा।

सेव नारंगी केला चीकू लीची अमरूद सारा,
भर-भर थाल चढ़ाऊँ तुमको कष्ट हरो अब सारा।
क्षेत्रपाल जिनमत श्रद्धानी जिनवर भक्त कहाओ,
जिनभक्तों की रक्षा करते सारे विघ्न नशाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय फलम् समर्पयामि स्वाहा।

लेकर सिन्दूर प्यारा देवा तुमको आज चढ़ाया,
तुमको है यह इष्ट इसी से तुमको आज चढ़ाया।
क्षेत्रपाल जिनमत श्रद्धानी जिनवर भक्त कहाओ,
जिनभक्तों की रक्षा करते सारे विघ्न नशाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय सिन्दूरम् समर्पयामि स्वाहा।

तिल्ली साफ कराकर मैंने उसको शुद्ध करायी,
उसका तैल बनाया मैंने उसकी धार करायी।
क्षेत्रपाल जिनमत श्रद्धानी जिनवर भक्त कहाओ,
जिनभक्तों की रक्षा करते सारे विघ्न नशाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय तैलम् समर्पयामि स्वाहा।

कण्ठी माला कुण्डल सारे मुकुट मँगाया प्यारा,
तुम्हें पहनाऊँ बड़े प्रेम से विघ्न नशे अब सारा।
क्षेत्रपाल जिनमत श्रद्धानी जिनवर भक्त कहाओ,
जिनभक्तों की रक्षा करते सारे विघ्न नशाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय आभूषणं समर्पयामि स्वाहा।

लाल लँगोट अरू लाल दुपट्टा जो है मन अतिभावन,
तुम्हें चढ़ाऊँ आज यहाँ पर करो सभी को पावन॥
क्षेत्रपाल जिनमत श्रद्धानी जिनवर भक्त कहाओ,
जिनभक्तों की रक्षा करते सारे विघ्न नशाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय वस्त्रम् समर्पयामि स्वाहा।

अष्ट द्रव्य को भरकर मैंने सन्मुख आज चढ़ाया
विघ्न सभी नश जावें मेरे इसीलिये मैं आया।
क्षेत्रपाल जिनमत श्रद्धानी जिनवर भक्त कहाओ,
जिनभक्तों की रक्षा करते सारे विघ्न नशाओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

दोहा

क्षेत्रपाल हे देवता, करो क्षेत्र उत्थान।
शान्ति धारा मैं करूँ , होय पाप की हान॥

शान्ति धारा...

लाल फूल भरकर लिया, पुष्पांजलि के हेत।
सुमनाञ्जलि अर्पण करूँ, मिले शांति शुभ खेत॥

पुष्पाञ्जलि...

गुणमालिका

दोहा

जिन शासन रक्षा करो, क्षेत्रपाल हे देव।
तुम गुण की गुणमालिका, गाता रहूँ सदैव॥

चौपाई

क्षेत्रपाल मैं तुम्हें मनाऊँ,
यथायोग्य सम्मान कराऊँ।
तुम हो जिनवर के श्रद्धानी,
जिनवृष सेवी तुम गुण खानी॥ 1॥

नब्बे छः की गिनती प्यारी,
नाम लेत होते सुखकारी।
पाँच अलग से नाम गिनाये,
ये सब जिन शास्त्रों में गाये॥ 2॥

समकित धारी हो तुम देवा,
करते हो जिनवर की सेवा।
रूप तुम्हारा है अति प्यारा,
जो है सबको ही सुखकारा॥ 3॥

लाल लँगोट अरू कंठी प्यारी,
लाल दुपट्टा है मनहारी।
सिर पर मुकुट है प्यारा प्यारा,
जन जन का मन हरता सारा॥ 4॥

छड़ी हाथ में तेरे सोहें,
बालक बूढ़ा सब मन मोहें।
पैर पावटा है अति प्यारा,
कानों कुण्डल है सुखकारा॥ 5॥

काली रेख सुनयनन सोहें,
बालक बूढ़ा सब मन मोहें।
स्वान सवारी है अति प्यारी,
बाजूबंध की शोभा न्यारी॥ 6॥

तिलक सिन्दूर सु मस्तक राजे,
नवग्रह भी अँगुली में साजे।
पान चबावें मुख में प्यारा,
कामदेव भी लज्जित सारा॥ 7॥

दांत में मेख लगाई प्यारी,
कड़ा हाथ में है सुखकारी।
ऐसा रूप तुम्हारा प्यारा,
जो है सब जन को सुखकारा॥ 8॥

यही प्रार्थना तुमसे देवा,
जिनवर की हम करें नित सेवा।
हे देवा मम विघन नशाओ,
मम परिवार को शांति दिलाओ॥ 9॥

विघ्न कभी ना हम पर आवे,
जिनवर के हम नित गुण गावें।
'योगी' यही भावना भाता,
पाओ सब जन शांति साता॥ 10॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षेत्रपालाय जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा

शासन रक्षक देव तुम, करो चरण नित सेव।
हम साधर्मी आपके, क्षेत्रपाल हे देव॥

इत्याशीर्वाद ....

बड़ी जयमालिका

दोहा

सकल, सिद्ध परमात्मा, सूरि पाठक जान।
सर्व साधु को नमन कर, गाऊँ मैं गुणगान॥

चौपाई

जय जय जय जिन देव नमस्ते,
देव करें सुर सेव नमस्ते।
समवशरण के धीश नमस्ते,
हमको दो आशीष नमस्ते॥ 1॥

परम ब्रह्म परमात्म नमस्ते,
परम रूप विज्ञान नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते,
तीन जगत के पति नमस्ते॥ 2॥

जिन पुंगव जिन राज नमस्ते,
शुद्ध बुद्ध परमात्म नमस्ते।
केवलज्ञान स्वरूप नमस्ते,
मोक्ष लक्ष्मी नाथ नमस्ते॥ 3॥

चार चतुष्टयधारी नमस्ते,
छियालीस गुण परिपूर्ण नमस्ते।
नाभिनन्दन श्रेष्ठ नमस्ते,
परमानन्द दातार नमस्ते॥ 4॥

शत इन्द्र कर तुम शीश नमस्ते,
तीन लोक के गुरु नमस्ते।
शिव सुख दाता तुम्हें नमस्ते,
मोक्षमार्ग उपदिष्ट नमस्ते॥ 5॥

मुक्ति रमा के कन्त नमस्ते,
निज में ही निज रूप नमस्ते।
चार घातिया घात नमस्ते,
दिव्य ध्वनि दातार नमस्ते॥ 6॥

चौरासी गण गणनाथ नमस्ते,
रिद्धि सिद्धि दातार नमस्ते।
मुक्ति भुक्ति दातार नमस्ते,
जय जय जय गुण थोक नमस्ते॥ 7॥

ब्रह्मा विष्णु करें नमस्ते,
तुम त्रिपुरारि तुम्हें नमस्ते।
तुम गुरुओं के गुरु नमस्ते,
देव करें जयकार नमस्ते॥ 8॥

भवि जीवन उद्धार नमस्ते,
समयसार के सार नमस्ते।
लक्ष्मीपति जिननाथ नमस्ते,
श्रीपतिजी श्रीकार नमस्ते॥ 9॥

सिद्ध शिला दातार नमस्ते,
हो सबका उद्धार नमस्ते।
तुम्हें करें शत इन्द्र नमस्ते,
''योगी'' के योगीन्द्र नमस्ते॥ 10॥

दोहा

तुम पद सेवा मैं करूँ, पाने मुक्ति खेत।
चार गति का नाश हो, ''योगी'' पावे सेत॥

दोहा

पूजा श्री जिनराज की, जो करता है भव्य।
''योगी'' आतमलब्धि हो, पद पावेगा नव्य॥

अथ देव पूजा वन्दना क्रियायां सकल कर्म क्षयार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण भाव पूजा वन्दना स्तव समेतं चैत्य भक्ति कायोत्सर्गम् करोभ्यहम्।

णमो अरिहन्ताणं।
णमो सिद्धाणं।
णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं।
णमो लोए सव्वसाहूणं।

(नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप करें।)

अढ़ाई द्वीप स्तवन

चौबोला छन्द

ढाई द्वीप अरू दो समुद्र गत पन्द्रह कर्म भूमियों में,
जो अर्हंत् भगवंत आदिकर तीर्थंकर जिन जितने हैं॥ 1॥

तथा जिनोत्तम केवलज्ञानी सिद्ध शुद्ध परिनिवृत देव।
पूज्य अलंकृत भव पारंगत धर्माचार्य धर्म देशक॥ 2॥

धर्म के नायक धर्म श्रेष्ठ चतुरंग चक्रवर्ती श्रीमान्।
श्री देवाधिदेव अरू दर्शन ज्ञान चरित गुण श्रेष्ठ महान्॥ 3॥

करूँ वंदना मैं कृति कर्म विधि से ढाई द्वीप के देव।
सिद्ध चैत्य गुरु भक्ति पठन कर नमूँ सदा बहु भक्ति समेत॥ 4॥

भगवन् सामायिक करता हूँ सब सावद्य योग तजकर।
यावज्जीवन वचन काय मन त्रिकरण से न करूँ दु:खकर॥ 5॥

नहीं कराऊं नहिं अनुमोदूं, हे भगवन्! अतिचारों को।
त्याग करूँ निन्दू गर्हूं अपने को मम आत्मा शुचि हो॥ 6॥

जब तक भगवत् अर्हद्देव की करूँ उपासना हे जिनदेव।
तब तक पाप कर्म दुष्चारित का मैं त्याग करूँ स्वयमेव॥ 7॥

तीन आवर्त एक शिरोनति करके 27 उच्छ्वास में 9 बार महामन्त्र का जाप्य करके मुक्ता शुक्ति मुद्रा से थोस्सामि स्तवन करें—

थोस्सामि स्तवन

चौबोला छन्द

स्तवन करूँ जिनवर तीर्थंकर केवलि अनन्त जिनप्रभु का,
मनुज लोक से पूज्य कर्मरज मल से रहित महात्मन् का।

लोकोद्योतक धर्म तीर्थंकर श्रीजिन का मैं नमन करूँ,
जिन चउबीस अर्हत् तथा केवलि गण का गुणगान करूँ॥ 1॥

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन सुमतिनाथ का कर वन्दन,
पद्मप्रभु जिन श्री सुपार्श्व प्रभु चन्द्र प्रभु का करूँ नमन।
सुविधि नामधर पुष्पदन्त शीतल श्रेयांस जिन सदा नमूँ,
वासुपूज्य जिन विमल अनन्त धर्म प्रभु शान्ति नाथ प्रणमूँ॥ 2॥

जिनवर कुन्थु अरह मल्लि प्रभु मुनिसुव्रत नमि को ध्यायूँ,
अरिष्टनेमि प्रभु श्री पारस वर्द्धमान पद शिर नाऊँ।
इस विध संस्तुत विद्युत रजोमल जरा मरण से रहित जिनेश,
चौबीसों तीर्थंकर जिनवर मुझ पर हो प्रसन्न परमेश॥ 3॥

कीर्तित वन्दित महिम हुए ये लोकोत्तम जिन सिद्ध महान,
मुझको दे आरोग्य ज्ञान अरू बोधि समाधि सदा गुणखान।
चन्द्रकिरण से भी निर्मल तर रवि से अधिक प्रभा भास्वर,
सागर सम गम्भीर सिद्धगण मुझको सिद्धि दें सुखकर॥ 4॥

पंच गुरु भक्ति

नरेन्द्र छन्द

पाँचों परमेष्ठी को वन्दूँ चौबीस जिनवर ध्यायूँ,
लोकोत्तम है शरण भूत जो उनको शीश नवाऊँ।
चौबीस यक्षी यक्ष मनाकर बत्तीस देव बुलाऊँ,
नवग्रह का अर्चन करके षोडश विद्या गाऊँ॥ 1॥

दश दिक्पालों का आह्वानन कर जया आदि रिझाऊँ,
अनावृत फिर यक्ष मनाकर उसको अर्घ दिलाऊँ।
पाँचों परमेष्ठी ही जग में शरण भूत हैं प्यारे,
ये ही हैं आराध्य हमारे ''योगी'' गुण उच्चारे॥ 2॥

अथ देव पूजा वन्दना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्म क्षयार्थं भाव पूजा वन्दना स्तव समेतं पंच महागुरु भक्ति कायोत्सर्गम् करोम्यहम्॥